पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा

अंकुर

दिसंबर 2016

BHIM
BHARAT INTERFACE FOR MONEY

बदलते भारत की नई तस्वीर

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
Punjab & Sind Bank
(राजभाषा विभाग)

पी.एस.बी

उषा अनन्तसुब्रह्मण्यन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी
Usha Ananthasubramanian
Managing Director & CEO

पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank

दिनांक: 02.01.2017

प्रिय श्री शर्मा जी,

विषय: आपके बैंक द्वारा प्रकाशित पत्रिका "राजभाषा अंकुर" का नवीनतम अंक।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ विभिन्न गतिविधियों के चित्रों से सुशोभित होने के कारण बेहद आकर्षक बन पड़ा है। **"बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान"** अति सुन्दर तथा प्रेरणादायी है। महिलाओं से संबन्धित अन्य लेख भी पठनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न छायाचित्रों एवं समाचारों के माध्यम से बैंक द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों की सुन्दर झलक मिलती है। वर्तमान अंक प्रेरणादायी तथा संग्रहणीय है।

"नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित" हृदयग्राही विचारों से परिपूर्ण एक सार्थक प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

(उषा अनंतसुब्रहमण्यन)

श्री डी. डी. शर्मा
महाप्रबन्धक,
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय, मानव संसाधन विकास विभाग,
बैंक हाउस, 21 राजेन्द्र प्लेस,
नई दिल्ली - 110008

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

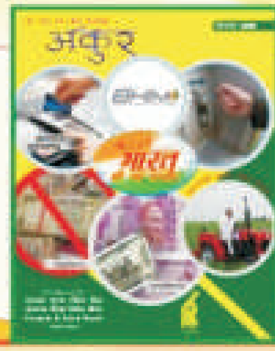

दिसंबर, 2016

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री एम. के. जैन एवं श्री ए. के. जैन

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री दीन दयाल शर्मा

महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक

श्री राजिंदर सिंह बेवली

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री राजीव कुमार राय

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

डॉ. नीरू पाठक

प्रबंधक

दीपक साव एवं रूप कुमार

राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : [illegible] जनवरी 2017)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस

5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली - 110015

फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	पत्रिका का गौरव	4
5.	गुणवत्ता कार्यक्रम	5
6.	भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन-सहभागिता	6
7.	ग्राहक के मुख से	9
8.	नानक नाम जहाज है (पंजाबी भाषा में हिंदी रूप सहित)	10
9.	अवध शाहनामा	12
10.	ज़रा सोचिए/कार्टून कोना	15
11.	प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना	16
12.	काव्य मंजूषा	20
13.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	21
14.	उपलब्धियां	22
15.	विमोचन	23
16.	राजभाषा गतिविधियाँ	24
17.	अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता-विमुद्रीकरण	25
18.	धूल	27
19.	एक भारतीय आत्मा	28
20.	कैशलेस क्रांति	32
21.	भारतीय हॉकी टीम की शान.....	36
22.	हिंदी-पंजाबी कार्यशालाएं	37
23.	मेक इन इंडिया	38
24.	हमारी मातृभाषा हमारा परिचय	40
25.	प्यारी बुआ	42
26.	विश्व शांति का सपना	44

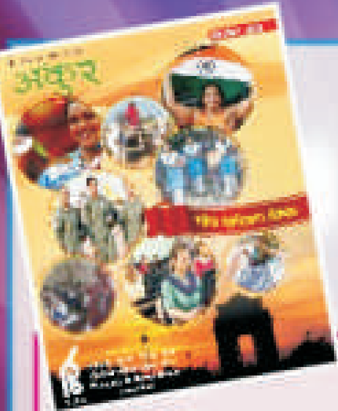

आपकी कलम से....

हमें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपका प्रतिष्ठित बैंक व्यवसाय तथा राजभाषा हिंदी के विकास के साथ-साथ हमारे समाज के सबसे महत्वपूर्ण वर्ग महिलाओं के प्रति भी संवेदनशील है तथा पत्रिका का एक अंक महिला सशक्तिकरण विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। यह एक अनुकरणीय प्रयास है।

पत्रिका का संपूर्ण कलेवर अत्यंत चित्ताकर्षक है। 'बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान' नामक लेख में जहां श्री जगमोहन सिंह मक्कड़ जी ने प्राचीन काल से अब तक भारतीय समाज में महिलाओं के सराहनीय योगदान को प्रतिबिम्बित किया है वहीं श्री राजिंदर सिंह बेदली द्वारा 'दीपा मलिक ने रियो पैरालम्पिक में रचा इतिहास' नामक अपने लेख में दीपा मलिक की सफलता की कहानी को अत्यंत रोचक एवं प्रेरणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पृष्ठ में भारत की सफल महिलाओं का उल्लेख पाठकोपयोगी है।

गोपाल सिंह
उप महाप्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक

महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित 'राजभाषा अंकुर' का सितंबर 2016 अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

पत्रिका का प्रथम आलेख 'बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान' में हमारे बैंक की अध्यक्ष माननीय श्रीमती अरुंधति भट्टाचार्य की उपलब्धियों को उजागर किया गया है। श्रीमती भट्टाचार्य द्वारा देश के सबसे बड़े बैंक का नेतृत्व करना भारतीय बैंकिंग उद्योग के लिए गर्व की बात है। पत्रिका के प्रारंभ में 'हिंदी दिवस' पर माननीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री, गृह मंत्री तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर के संदेश पाठकों को राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अभिप्रेरित करते हैं। ओलम्पिक 2016 में हमारे देश की बेटियों ने इतिहास रच दिया है। देश का हर नागरिक इस उपलब्धि से गदगद है। अंक में सुश्री हरविन्द सचदेवा से साक्षात्कार के साथ-साथ 'बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान', 'भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकार', 'महिलाएं और ओलम्पिक 2016', 'अस्मिता को ढूंढती नारी', 'स्वर कोकिला लता मंगेशकर' तथा 'शक्ति का सशक्तिकरण' जैसे लेखों को सम्मिलित करना इसे संग्रहणीय बनाता है। 'सीख' तथा 'बंधन मुक्ति की चाह' कहानियां अपनी बात पूरी तरह कहने में समर्थ हैं। महिला केंद्रित कविताएं तथा 'चलते-चलते' स्तंभ अच्छा लगा। पत्रिका में फुट नोट पर विशिष्ट क्षेत्र की महिलाओं का संक्षिप्त उल्लेख सागर में मोती जैसा है। लालित्यपूर्ण अंक निकालने के लिए आपको बधाई। नववर्ष 2017 की शुभकामनाओं के साथ।

- ए. वी. ब्रह्म राव
महाप्रबंधक (राजभाषा एवं कॉर्पोरेट सेवाएं)
भारतीय स्टेट बैंक, मुंबई

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका "राजभाषा अंकुर" के जुलाई-सितंबर 2016 अंक की प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए आपको धन्यवाद देते हैं। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर व आकर्षक है। समाज में संघर्षरत महिलाओं के जीवन के पहलुओं को उभारते लेख, कहानी व कविता हृदयपट्टल पर अमिट छाप छोड़ते हैं। "महिला सशक्तिकरण" विशेषांक में प्रकाशित सामग्री पत्रिका के औचित्य को सार्थकता प्रदान कर रही है। मैं इस सुंदर अंक को प्रकाशित करने के लिए आपको व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं। मैं कामना करता हूं कि पत्रिका की यह उत्कृष्टता सदैव बनी रहे।

भवदीय

राहुल भावे
उप महाप्रबंधक, केनरा बैंक

शेष पत्र पृष्ठ 8 पर......

संपादकीय

प्रिय पाठको,

जब यह अंक आपको प्राप्त होगा, तब शिशिर ऋतु की सुनहरी धूप के साथ नववर्ष 2017 आपका स्वागत कर चुका होगा। सर्वप्रथम आप सभी को मेरी तथा राजभाषा विभाग की ओर से नव वर्ष की बहुत-बहुत बधाई तथा शुभकामनाएं। नए वर्ष के आगमन के साथ राजभाषा अंकुर पत्रिका भी अपने हर अंक के साथ निरंतर नित नई ऊंचाईयाँ छू रही है। मुझे यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हमारी पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' को ''प्रथम पुरस्कार'' प्राप्त हुआ है। इसके लिए न केवल राजभाषा विभाग बल्कि आप सभी बधाई के पात्र हैं।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नोट-बंदी अभियान को सफल बनाने में आप सबने भी बढ़-चढ़ कर अपना कार्य किया है। विमुद्रीकरण की देश-व्यापी क्रांति को सफल बनाने का श्रेय वस्तुतः बैंकों को ही जाता है। हमारे बैंक के सभी स्टाफ सदस्य, चाहे वे शाखा में कार्यरत हैं अथवा आंचलिक/प्रधान कार्यालय में, उनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। प्रस्तुत अंक में वर्तमान परिवेश को ध्यान में रखकर हमने माननीय प्रधानमंत्री जी की विभिन्न योजनाओं संबंधी लेखों को विशेष रूप से समाहित करने का प्रयास किया है। ''विमुद्रीकरण समय की माँग'', ''प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना'' तथा ''कैशलेस क्रांति'', लेख ज्ञानवर्धक हैं। ''बैंकों में जनसहभागिता में सतर्कता'' लेख पठनीय होने के साथ अनुकरणीय भी है। पत्रिका में आरंभ किया गया नया स्तंभ ''ग्राहक के मुख से'' बैंक के ग्राहकों को भी पत्रिका से जोड़ रहा है, यह स्तंभ ग्राहक के रिश्तों को और अधिक सुदृढ़ करेगा। प्रादेशिक भाषा की श्रृंखला में इस बार बैंक की अपनी भाषा राजभाषा हिंदी की सहचरी पंजाबी भाषा में रचना (हिंदी रूप के साथ) प्रकाशित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त काव्य-मंजूषा, कहानी, कार्टून तथा अन्य साहित्यिक विधाओं से भरपूर यह अंक अत्यंत रुचिकर है। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए आप सभी की सहभागिता अपेक्षित है।

आशा है 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं।

दीन दयाल शर्मा

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

पत्रिका का गौरव

रियो पैरालंपिक 2016 की रजत पदक विजेता दीपा मलिक जी का स्नेह भरा पत्र 'अंकुर' पत्रिका के लिए प्राप्त हुआ है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक, दीपा जी को और ऊँचे मुकाम हासिल करने की शुभकामनाएं देता है।

दीपा मलिक

अर्जुन पुरस्कार 2012
राष्ट्रपति रोल मॉडल 2014
रजत पदक रिओ पैरालंपिक 2016

महोदय,

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक मुझे प्राप्त हुआ। मैंने इसे बहुत ध्यान से पढ़ा है। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि आपके बैंक ने अपनी पत्रिका में खेलों को इतना महत्व दिया है। मेरे स्वयं पर लिखे गए लेख 'दीपा मलिक ने रियो पैरालंपिक में रचा इतिहास' के लेखक श्री राजिंदर सिंह बेयली ने, न केवल पाठकों को खेलों के प्रति आकर्षित करने का प्रयास किया है बल्कि, मेरे द्वारा कही गई प्रेरक बातों के मर्म को पहचानने में भी वे सफल रहे हैं। खेलों की ऐसी बहुत सी प्रेरक कहानियां हैं जो अभी तक अनकही ही रही हैं। आने वाले समय में यदि आपका बैंक इन्हें पत्रिका में प्रकाशित करना चाहे तो मैं आपको अपना पूरा सहयोग देने को तैयार हूं।

पत्रिका के अन्य लेख भी रुचिकर और जानकारीपरक हैं। श्री मक्कड़ ने सिद्ध कर दिया है कि बैंकिंग उद्योग में महिलाएं बहुत ही सशक्त हो चुकी हैं और उनके बिना अब बैंकिंग उद्योग की कल्पना भी नहीं की जा सकती। श्री कुलवंत सिंह शेहरी ने अपने लेख में स्वर कोकिला 'लता मंगेशकर' के जीवन की कई नई जानकारियां बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत की हैं। हर पृष्ठ के नीचे प्रथम महिला संबंधी आपका दृष्टिकोण मुझे बहुत पसंद आया।

कुल मिलाकर पत्रिका नारी सशक्तिकरण के अपने प्रयास में सफल रही है। यह अंक तो मेरे लेख के कारण मुझ तक पहुंच गया। आशा है आप मुझे अपनी डाक सूची में डाल लेंगे ताकि भविष्य में भी मुझे आपकी पत्रिका पढ़ने का मौका मिलता रहे।

शुभकामनाओं सहित !

दीपा मलिक

कड़े परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता।

गुणवत्तापूर्वक कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग के तत्वावधान में सी.बी.आर.टी. चंडीगढ़ द्वारा राजभाषा अधिकारियों को ''बैंक की लाभप्रदता बढ़ाने में प्रभावी ग्राहक सेवा और भारतीय भाषाएं'' विषयक एक विशेष संगोष्ठी के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया ।

चित्रों में आंचलिक प्रबंधक चंडीगढ़ श्री गुरदेव सिंह सरना, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिन्दर सिंह बेवली, प्रधानाचार्य श्री एन. पी. सिंह तथा मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री इन्दरपाल कौर तथा कार्यक्रम में उपस्थित राजभाषा अधिकारी दिखाई दे रहे हैं ।

लाभप्रदता संबंधी संगोष्ठी

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग के तत्वावधान में दिनांक 10.11.2016 को 'बैंकिंग परिचालन एवं ग्राहक सेवा को बेहतर बनाने में हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान' विषय पर आंचलिक कार्यालय, लखनऊ में एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन आंचलिक प्रबंधक श्री राजीव रावत द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्र.का.राजभाषा विभाग के श्री राजिंदर सिंह बेवली, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) विशेष रूप से मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित हुए। चित्र में आंचलिक प्रबंधक श्री राजीव रावत सहभागियों को प्रेरित कर रहे हैं । चित्र में स्थानीय राजभाषा अधिकारी श्री विभाष कुमार भी दिखाई दे रहे हैं।

भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन-सहभागिता

प्रदीप कुमार राय

केंद्रीय सतर्कता आयोग सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी को बढ़ावा देने तथा भ्रष्टाचार मुक्त समाज का सृजन करने के अपने प्रयासों के एक हिस्से के रूप में हर साल सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन करता है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन प्रत्येक वर्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल, जिन्होंने देश को एकसूत्र में बांधने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, के जन्म की साल-गिरह के अवसर पर मनाया जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्मदिन 31 अक्तूबर को आता है, अतः 31 अक्तूबर वाली सप्ताह को प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक वर्षों की तरह इस वर्ष भी भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा अन्य सभी संगठनों के लोक सेवकों द्वारा शपथ लेकर सतर्कता जागरूकता सप्ताह (31 अक्तूबर से 5 नवम्बर तक) मनाया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाने का मतलब सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दोहराना है इसलिए आयोग भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के लिए अधिक प्रभावी और सतत माध्यम के रूप में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन द्वारा जनता में जागरूकता पैदा करने पर अधिक जोर देता है।

प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन के लिए सतर्कता आयोग बैंकों तथा सभी सरकारी कार्यालयों को दिशा निर्देश जारी करती है, जिसके अनुरूप सभी सरकारी संस्थाएं कार्य-कलापों का आयोजन करती है। विगत वर्षों के दौरान आयोग के द्वारा दिशा-निर्देश निम्न विषयों पर केन्द्रित थी, जिसका पालन करते हुए सभी संस्थाओं/संगठनों के द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु उपयुक्त कार्रवाई की गई :

- सुशासन के प्रभावी उपाय के रूप में निवारक सतर्कता (2015)
- भ्रष्टाचार से संघर्ष - प्रौद्योगिकी की समर्थक भूमिका (2014)
- उत्तम अभिशासन को बढ़ावा देना (2013)
- लोक प्रापण में पारदर्शिता (2012)
- सहभागी सतर्कता (2011)
- भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता उत्पत्ति एवं प्रचार (2010)

इसी क्रम में आयोग ने सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने तथा भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने में जनता की भागीदारी को विशेष महत्व देते हुए इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के लिए निम्न विषय को चुना है :

''ईमानदारी को प्रोत्साहन देने तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन-सहभागिता''

सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा : उपरोक्त विषय के अनुरूप इस वर्ष आयोग ने पहली बार साधारण नागरिकों में तथा निगमों /प्रतिष्ठानों/फर्मों आदि (विशेषकर निजी क्षेत्रों की) में भ्रष्टाचार उन्मूलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा आचरण, पारदर्शिता तथा सुशासन के उच्चतम मानकों को बनाये रखने की अभिपुष्टि हेतु

'सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा' की एक संकल्पना पर विचार किया है। यह आयोग की वेब-साईट में ई-प्रतिज्ञा के रूप में उपलब्ध कराई गई, जिसके द्वारा सभी सम्बंधित पक्ष ई-प्रतिज्ञा ले कर भ्रष्टाचार-रोधी कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

जन-सहभागिता : वर्तमान परिपेक्ष्य में समाज के सभी जरूरतमंद वर्गों तक आर्थिक विकास को ले जाने के लिए भ्रष्टाचार समाप्त करने की आवश्यकता है। यद्यपि भ्रष्टाचार की समस्या से निपटने के लिए विभिन्न भ्रष्टाचार निरोधी एजेंसियां प्रयास कर रही हैं, लेकिन उनके प्रयास सभी हितधारकों/सम्बंधित पक्षों की सक्रिय सहभागिता के बिना पूरे नहीं हो सकते हैं। इसलिए यह तभी संभव है जब भ्रष्टाचार निरोधी अभियान में जागरुक, सक्रिय और सशक्त जनता की भागीदारी हो। सतर्कता आयोग का यह विश्वास है कि जनता में अधिक जागरूकता पैदा करने और उनकी भ्रष्टाचार निरोधी प्रयासों में भागीदारी होने से समाज से भ्रष्टाचार को आमूल समाप्त करने का संकल्प मजबूत होगा। इसीलिए आयोग ने भ्रष्टाचार से अधिक प्रभावी और सही तरीके से लड़ने के लिए जनता के बीच जागरुकता बढ़ाने पर जोर दिया है तथा सभी हितधारकों/सम्बंधित पक्षों से अनुरोध किया है कि वे समाज के सभी वर्गों में जागरूकता पैदा करने के लिए व्यापक रूप से भागीदारी करें।

जन-सहभागिता के तहत आयोग ने यह दिशा-निर्देश जारी करते हुए कहा है कि सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंक ग्राम पंचायतों में जागरूकता का प्रचार करने हेतु ग्रामीण तथा अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में "ग्राम सभा जागरूकता" का आयोजन करेंगे। जिसके लिए विशेष कार्य योजना बनाई जाए ताकि उन क्षेत्रों की जन-साधारण में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता तथा भ्रष्टाचार-रोधी प्रयासों के प्रति जागरूकता लाई जा सके। यह ग्राम पंचायतों में सभा/चौपाल का आयोजन कर सभी सम्बंधित पक्षों जैसे सरपंच, ग्राम पंचायत के सदस्यों, स्वयं सहायता समूहों, मनरेगा के कार्यकर्ताओं, कृषकों, छात्रों तथा नागरिकों को आमंत्रित कर किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसे ग्राम सभा के प्रधान, सरपंच या अन्य से भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता पर व्याख्यान देने और फिर चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

छात्रों में जागरूकता : पिछले वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान विभिन्न संगठनों द्वारा विद्यालयों/महाविद्यालयों के छात्रों के लिए बड़े स्तर पर प्रतियोगिताएं तथा कार्य-कलाप आयोजित किये गए थे जिनमे समग्र देश के 400 से अधिक शहरों/कस्बों में लगभग 1600 महाविद्यालयों तथा 2300 विद्यालयों को सम्मिलित किया गया था। पिछले वर्ष के आयोजन की सफलता से प्रेरित होकर आयोग ने इस वर्ष भी सभी संगठनों को सलाह दी है कि वे देश के सभी शिक्षा-संस्थानों के छात्रों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु उपयुक्त कार्य-कलाप संचालित करें ताकि समग्र राष्ट्र में अधिकतम छात्रों/युवाओं तक पहुंचा जा सके और उनमें भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार-रोधी उपायों पर तथा नैतिक मूल्यों, नीति-शास्त्र, सुशासन-पद्धतियों पर जागरूकता उत्पन्न हो।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एचआरडी) को पाठ्य पुस्तकों में भ्रष्टाचार रोधी अध्याय शामिल करने की सलाह दी है ताकि स्कूली बच्चों को भ्रष्टाचार के नुकसानदेह असर के बारे में जागरूक किया जा सके। आयोग ने कहा है, "हमारा लक्ष्य बच्चों को भ्रष्टाचार के मुद्दों और इसके नुकसानदेह प्रभावों पर उनके पाठ्यक्रम के जरिए उन्हें निरंतर शामिल किए रखना है। इस उद्देश्य के लिए हमने मंत्रालय के साथ एक वार्ता शुरू की, ताकि एनसीईआरटी की पुस्तकों में सत्यनिष्ठा/नैतिकता पर मौजूदा विषय वस्तु में बदलाव के सुझाव दिए जा सकें।" केंद्रीय सतर्कता आयुक्त श्री केवी चौधरी ने बताया कि बच्चों में जागरूकता लाने के लिए भविष्य के नेताओं को सशक्त करने से निश्चित ही भारत बदलेगा और भ्रष्टाचार मुक्त बनेगा।

मामलों का शीघ्र निपटारा : केंद्रीय सतर्कता आयोग का नई दिल्ली में एक पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया। पत्रकारों को संबोधित करते हुए केंद्रीय सतर्कता आयुक्त श्री केवी चौधरी ने भ्रष्टाचार के बारे में समझाते हुए कहा कि केवल पैसा देना ही भ्रष्टाचार नहीं है, बल्कि इसमें वे सभी कार्य शामिल हैं, जहां पर प्रक्रियाओं के साथ समझौता किया जाता है। उन्होंने कहा कि 'दंडात्मक सतर्कता' से अधिक 'सुरक्षात्मक

सतर्कता' पर जोर दिया जाना चाहिए, निर्धारित प्रक्रियाओं से अलग अगर कुछ होता है, तो उस मामले में सचेत करने के लिए प्रणालियां और प्रक्रियाएं तैयार की जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि गलत कार्य पर रोक लगाने के लिए प्रणाली में बदलाव लाना महत्वपूर्ण है। लंबित और देरी के मामलों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि जिन क्षेत्रों में देरी होती है, उन्हें चिन्हित करने की आवश्यकता है और आवेदनों, उनके मानदंडों तथा अन्य संबंधित मामलों से निपटने के बारे में प्रक्रियाओं और एसओपी को व्यवस्थित कर उचित कार्रवाई की जानी चाहिए।

प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग

आपकी कलम से.......

'अंकुर' का तिमाही सितंबर 2016 का अंक प्राप्त हुआ, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका 'महिला सशक्तिकरण विशेषांक' पर आधारित है जो महिलाओं द्वारा प्राप्त उपलब्धियों को दर्शाता है। निश्चित ही आज महिलाएं पुरुषों से कम नहीं है, हर क्षेत्र में अपने दम पर देश का नाम रोशन कर दिखाया है। आज इस पुरुष प्रधान देश में महिलाओं ने घर की चार दिवारी से निकल कर अपनी पहचान बनाई है, चाहे वो सिंधु हो या लता मंगेशकर, साक्षी मलिक, अरून्धती भट्टाचार्या या शिखा शर्मा। आज देश को इन पर गर्व है, निश्चित रूप से देश का भविष्य भी इन्हीं पर निर्भर करता है। 'अंकुर' का ये अंक बेहद ही पठनीय एवं आकर्षक है। पत्रिका के मंगल भविष्य की कामना करते हुए नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

सुरेश कुलकर्णी
सहायक महाप्रबंधक
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, नई दिल्ली

मैंने पूरी पत्रिका को ध्यानपूर्वक पढ़ा है। पत्रिका का हर पृष्ठ अपने आप में महिलाओं की एक सुंदर कहानी बयां करता है। श्री जगमोहन सिंह मक्कड़ के लेख 'बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान' में सिद्ध होता है कि महिलाएं बैंकिंग की बहुत ही मजबूत कड़ी है और पुरुषों से किसी भी सूरत में कम नहीं हैं। यही बात आपके बैंक की उप महा प्रबंधक सुश्री हरविन्दर सचदेवा ने भी कही है कि महिला को महिला होने का नाजायज़ फायदा नहीं उठाना चाहिए और अपने पुरुष सहकर्मियों के साथ मर्यादाओं में रहते हुए पूर्ण निष्ठा से कार्य करने चाहिए। राजिंदर सिंह बेदली ने ओलंपिक संबंधी अपने लेख में पाठकों की रुचि का विशेष ध्यान रखते हुए 'दीपा मलिक' के प्रेरणात्मक प्रसंग बहुत ही खूबसूरती से पिरोए है। ज्योत्सना सिंह की कहानी 'बंधन मुक्ति की चाह' वास्तव में दिल को छू लेने वाली कहानी है जो आज के परिवेश में परिवार को जोड़ने में बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है। इसी प्रकार डॉ. नीरू पाठक का 'ज़रा सोचिए' श्री शिव कुमार गुप्ता का 'माँ', श्री बेदली का 'चलते-चलते' और यहाँ तक कि श्री पीयूष का कार्टून भी महिलाओं के विभिन्न पहलुओं पर गंभीरता से सोचने पर मजबूर करता है। लता मंगेशकर के लेख में श्री ओहरी ने उस महान गायिका के जीवन को बहुत ही सादगी से चित्रित किया है। पत्रिका का कवर पृष्ठ तो पत्रिका की जान बन पड़ा है। इस सुंदर व ज्ञानवर्धक प्रकाशन के लिए आपको व संपादक मंडल के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई।

आशा है भविष्य में भी आप अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका इसी प्रकार पढ़ने का अवसर प्रदान करते रहेंगे।

के. एस. एल. भामरी (सेवानिवृत्त)

आपकी पत्रिका बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक लगी। पत्रिका में प्रकाशित लेख ''बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान'' में विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त महिलाओं के बारे में काफी जानकारी मिली। खासकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में नारियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। परिवार से लेकर समाज के हरेक क्षेत्र में आज नारियां न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं बल्कि समाज में बदलाव के लिए नारियां आगे आ रही हैं। नारियों में जागरूकता लाने और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आपके द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका एक पथ प्रदर्शक का काम करेगी, इसमें संदेह नहीं है। पत्रिका की सभी रचनाएं रोचक तथा मनोहर लगी। इसके अलावा पत्रिका की सजावट और फोटोग्राफ से इसकी सुंदरता निखर आई है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

साइब पात्र
मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

ग्राहक के मुख से

सरदार ठाकर पाल सिंह जी के चेहरे को देखकर ही हम भाँप गए थे कि हमारी मुलाकात हैवल्स के नामी-गिरामी डीलर से नहीं बल्कि एक बहुत ही अच्छे इंसान से होने वाली है। उनके चेहरे की सौम्यता, उनकी मुस्कुराहट, उनकी बातचीत का अंदाज़ और उनकी सादगी..... सभी कुछ उनके सकारात्मक व्यक्तित्व की ख़ासीयतों को बयां कर रहा था। उनके हर शब्द ... हर वाक्य में आत्मविश्वास की झलक नजर आ रही थी। प्रस्तुत है, उनके द्वारा दिए गए विचारों की एक झलक

A B. Pal Electricals Pvt. Ltd.
CREATE TO CONNECT

सरदार ठाकर पाल सिंह

आपके बैंक के साथ जुड़ना भी एक इत्तेफाक ही था। जुलाई 1978 में दिल्ली के फतेहपुरी इलाके में जब पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा खुली तब श्री बी.एस.बाजवा, जो मूल रूप से अंबाला के रहने वाले थे, ने मेरा खाता (कैश क्रेडिट लिमिट) खोलने के लिए शाखा में परिचय दिया, और शाखा खुलने के पहले दिन से आज तक हम पंजाब एण्ड सिंध बैंक की फतेहपुरी शाखा से जुड़े हुए हैं। सरदार मोहन सिंह जी उस समय शाखा के प्रबंधक थे।

जीवन में बहुत दिक्कतें, बहुत परेशानियां देखी हैं हमने। वे सर्दी की ठिठुरती रातें और तनाव में ही लेटे लेटे सुबह का इंतजार करना। शीतकालीन धुंध भरी सुबहों को कितनी ही बार सुबह सात बजे मैं स्कूटर पर मैनेजर साहब के घर पहुँचता और अपने उस दिन की पैसों संबंधी परेशानी से उन्हें भी परेशान करता। श्री मोहन सिंह बहुत ही नेकदिल इंसान थे और मेरी समस्या का समाधान करने का भरोसा देते। कहते हैं जब आप बहुत ही गंभीरता से अपने कामों के प्रति समर्पित होते हैं तो भगवान भी बहुत करीब आकर आपको सही राह सुझाते हैं। बैंक खुलने के बाद शाखा प्रबंधक हमारी समस्याओं का समाधान निकाल चुके होते थे। इससे पहले हम दूसरे बैंकों की ओर भी रुख़ कर चुके थे लेकिन कहीं से कोई सकारात्मक जवाब न मिलता।

बैंकिंग उद्योग का सबसे अहम् मंत्र है.. .. 'ग्राहक सेवा' और मुझे खुशी होती है यह बताते हुए कि पंजाब एण्ड सिंध बैंक का स्टाफ इस मंत्र से भली भांति परिचित है। 38 सालों का रिश्ता यूं ही नहीं बना रह सकता। 1978 में बैंक से जुड़ना अब जुड़ाव में बदल चुका है। हमारे व्यापार में आशातीत वृद्धि के लिए ईश्वर की कृपा, हमारा और हमारे कार्मिकों के परिश्रम के साथ पंजाब एण्ड सिंध बैंक की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता। समय-समय पर बदलते शाखा प्रबंधकों सहित आपके बैंक के सभी स्टाफ सदस्य बेहतर ग्राहक सेवा की एक मिसाल हैं। इसे मैं केवल अच्छी ग्राहक सेवा नहीं, बल्कि उत्कृष्टतम सेवा की एक मिसाल कहना पसंद करूँगा। मैं अपनी कंपनी की ओर से आपके बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

प्रादेशिक भाषा

पंजाबी

हरप्रीत कौर

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਜਹਾਜ ਹੈ

ਭਾਰਤਵਰਸ਼ ਸਾਧੂ, ਸੰਤਾਂ, ਪੀਰ, ਪੈਗੰਬਰਾਂ ਦੀ ਜਨਮਭੂਮੀ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਆਗਮਨ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਖੁਦਾ ਦੇ ਪੈਗੰਬਰਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਚ ਹੋਇਆ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਹਾਪੁਰਖਾਂ ਵਿਚ ਇਲਾਹੀ ਨੂਰ ਦੀ ਉਹ ਚਮਕ ਸੀ ਜਿਸ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਨਾਲ ਸੰਸਾਰ ਚੋਂ ਅਗਿਆਨ ਦਾ ਹਨੇਰਾ ਦੂਰ ਹੋਇਆ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸੰਸਾਰ ਦਾ ਮਾਰਗਦਰਸ਼ਨ ਅਧਿਆਤਮ ਦੇ ਨਾਲ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਹ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਖੁਦਾ ਦੀ ਜੋਤ, ਉਸ ਦਾ ਨੂਰ ਸਰਵਵਿਆਪੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਲੱਭਣ ਦੇ ਲਈ ਦੂਰ ਦੂਰ ਭਟਕਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ, ਉਸ ਦੀ ਹੋਂਦ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਾਨਵੀ ਸਭਯਤਾ ਦੇ ਮਾਰਗ-ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਨਾਮ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਆਉਣ ਨਾਲ ਹੀ ਧਰਤੀ ਦੇ ਧੁੰਦਲੇ ਛੱਟਣ ਲੱਗ ਗਏ ਤਾਂ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਕੇ ਕਿਹਾ-

ਸਤਿਗੁਰ ਨਾਨਕ ਪ੍ਰਗਟਿਆ, ਮਿਟੀ ਧੁੰਧ ਜਗ ਚਾਨਣ ਹੋਆ।।

ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਅਗਿਆਨ ਦੇ ਹਨੇਰੇ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਿਵਾਉਣ ਵਾਲੇ ਇਸ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਦਾ ਜਨਮ ਵਿਕਰਮੀ ਸੰਵਤ 1526 ਜਾਨੀ ਸਨ 1469 ਚ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਲਾਗਲੇ ਪਿੰਡ ਤਲਵੰਡੀ ਨਾਮੇ ਵਿਖੇ ਹੋਇਆ ਜੋ ਕਿ ਹੁਣ ਪਾਕਿਸਤਾਨ ਚ ਹੈ ਅਤੇ ਸ੍ਰੀ ਨਨਕਾਣਾ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਨਾਂ ਨਾਲ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਦੇ ਰੂਪ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਪਿਤਾ ਦਾ ਨਾਂ ਕਾਲੂ ਚੰਦ ਅਤੇ ਮਾਤਾ ਦਾ ਨਾਂ ਤ੍ਰਿਪਤਾ ਦੇਵੀ ਸੀ। ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦਾ ਝੁਕਾਅ ਅਧਿਆਤਮ ਵੱਲ ਸੀ। ਸਾਧੂ ਸੰਤਾਂ, ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਦੀ ਸੰਗਤ ਕਰਨਾ, ਅਧਿਆਤਮ ਤੇ ਚਰਚਾ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਵਿਆਖਿਆ ਕਰਨਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ੌਕ ਸਨ।

ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਬਾਲ ਅਵਸਥਾ ਵਿਚ ਸਨ ਉਦੋਂ ਹੀ ਵਿਦਵਾਨ ਜੋਤਸ਼ੀ ਨੇ ਇਹ ਭਵਿੱਖਬਾਣੀ ਕੀਤੀ ਕਿ ਇਹ ਬਾਲਕ ਅੱਗੇ ਚਲ ਕੇ ਹਿੰਦੂ, ਮੁਸਲਮਾਨ ਦੋਹਾਂ ਦਾ ਮਾਰਗ-ਦਰਸ਼ਕ ਹੋਵੇਗਾ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਦੌਲਤ ਖਾਂ ਲੋਧੀ ਦੇ ਮੋਦੀਖਾਨੇ ਵਿੱਚ ਤੇਰਾਂ-ਤੇਰਾਂ ਤੋਲ ਕੇ ਇਹ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਸਭ ਕੁਝ ਉਸ ਖੁਦਾ ਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਹੀ ਨਹੀਂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਭਾਈ ਲਾਲੋ ਅਤੇ ਮਲਿਕ ਭਾਗੋ ਵੱਲੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਗਏ ਭੋਜਨ ਵਿਚੋਂ ਦੁੱਧ ਅਤੇ ਲਹੂ ਵੱਖ ਕਰ ਕੇ ਦੁਨੀਆ ਨੂੰ ਹੱਕ ਦੀ ਕਮਾਈ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਦਾ ਭੇਦ ਸਵੀਕਾਰ ਨਾ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ –

ਅਵਲਿ ਅਲਹ ਨੂਰੁ ਉਪਾਇਆ, ਕੁਦਰਤਿ ਕੇ ਸਭ ਬੰਦੇ। ਏਕ ਨੂਰ ਤੇ ਸਭੁ ਜਗੁ ਉਪਜਿਆ, ਕਉਨ ਭਲੇ ਕੋ ਮੰਦੇ।।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਭਗਤ ਦੇਸ਼-ਵਿਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਹਨ। ਸਨ 1969 ਵਿਚ ਦੁਨਿਆਭਰ ਚ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ 500ਵਾਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਉਤਸਵ ਧੂਮ-ਧਾਮ ਨਾਲ ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਗਿਆਨ ਅਤੇ ਵਿੱਦਿਆ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਸੀ **ਫੈਲੇ ਵਿਦਿਆ ਚਾਨਣ ਹੋਇ।** ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ 500ਵੇਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਉਤਸਵ ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਖੇ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਜਿਸ ਨੇ ਵਿਦਿਅਕ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਨਵੇਂ ਕੀਰਤੀਮਾਨ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੇ। ਇਸ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਵਿਖੇ ਅੱਜ ਵੀ ਦੇਸ਼-ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਤੋਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵਿੱਦਿਆ ਰੂਪੀ ਦੌਲਤ ਲੈਣ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।

ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਇਹ ਵੀ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ ਸਰਬਤ ਦਾ ਭਲਾ ਮੰਗਣ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਭਲਾ ਮੰਗਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ। ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਭਗਤਾਂ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਜਹਾਜ਼ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼ਾਂ ਤੇ ਚੱਲਣਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਮ ਰੂਪੀ ਜਹਾਜ਼ ਤੇ ਚੜ੍ਹਣ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਇਸ ਭੌਤਿਕਵਾਦ ਵਿਚ ਫਸਿਆਂ ਨੂੰ ਸੰਤੋਖ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਅਤੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ

ਨਾਨਕ ਨਾਮ ਜਹਾਜ਼ ਹੈ, ਚੜ੍ਹੇ ਸੋ ਉਤਰੇ ਪਾਰ।
ਜੋ ਸ਼ਰਧਾ ਕਰ ਸੇਂਵਦੇ, ਗੁਰੂ ਪਾਰ ਉਤਾਰਨਹਾਰ।।

- आँचलिक कार्यालय, अमृतसर

हरप्रीत कौर

नानक नाम जहाज है

भारतवर्ष साधु, संतों, पीर, पैगंबरों की जन्मभूमि रही है, जिनका आगमन इस संसार में खुदा के पेशकारों के रूप में हुआ। इन महापुरूषों में अल्लाही नूर की वो चमक थी, जिसके प्रकाश से संसार से अज्ञान का अंधकार दूर हुआ। उन्होंने संसार का मार्गदर्शन आध्यात्मवाद के संदर्भ में करते हुए बताया कि खुदा की ज्योति, उसका नूर सर्वव्यापक है तथा उसे ढूंढने के लिए दूर-दूर भटकने की आवश्यकता नहीं, उस की विद्यमानता को समझने की जरूरत है। इन्हीं मानवीय सभ्यता के मार्ग दर्शकों में एक महानुभाव गुरू नानक देव जी थे जिनके इस संसार में आगमन से ही अंधकार के बादल छँटने लगे, तभी अनुयायियों ने उनसे प्रभावित होकर कहा:

सतगुरू नानक प्रगटिया, मिटी धुंध जग चानन होइया।।

संसार को अज्ञान के अंधकार से मुक्ति दिलवाने वाले इस महान संत का जन्म विक्रमी संवत 1526 अर्थात् सन् 1469 में लाहौर के पास गाँव तलवंडी में हुआ जो कि अब पाकिस्तान में है और श्री ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। इस शांति के दूत गुरू नानक देव जी के पिता का नाम कालू चंद था और माता जी का नाम तृप्ता देवी था। गुरू जी का झुकाव बाल्यकाल से ही आध्यात्म की ओर था। साधु संतों, विद्वानों की संगत करना आध्यात्म पर चर्चा करना तथा उस की व्याख्या करना इनके शौक थे।

गुरू नानक देव जी जब बाल्यकाल में थे तब ही किसी विद्वान ज्योतिषी ने यह भविष्यवाणी की थी कि यह बालक आगे चल कर हिन्दू-मुसलमान दोनों का पथ-प्रदर्शक बनेगा। गुरू जी ने दौलत खान मोदी के मोदीखाने में तेरा-तेरा तौल कर यह बताया कि सब कुछ उस खुदा का है। इतना ही नहीं गुरू जी ने भाई लालो तथा मलिक भागो की तरफ से पेश किए गए भोजन में से दूध और रक्त अलग कर दुनिया को अपने हक की कमाई करने का उपदेश दिया। गुरू जी ने जात-पात का भेद स्वीकार न करते हुए कहा:

अव्वल अल्लाह नूर उपाईया, कुदरत के सब बंदे। एक नूर ते सब जग उपजिआ कौन भले कौन मंदे।।

गुरू नानक देव जी के भक्त देश-विदेश में हैं। सन् 1969 में दुनिया भर में गुरू नानक देव जी का 500वां प्रकाश उत्सव धूम-धाम के साथ मनाया गया। गुरू जी ने ज्ञान और विद्या की महिमा को स्वीकार करते हुए कहा कि **फैले विद्या चानण होए**। गुरू जी के 500वें प्रकाश उत्सव पर अमृतसर में गुरू नानक देव विश्वविद्यालय की स्थापना की गई जिस ने विश्व में नए कीर्तिमान स्थापित किए। इस विश्वविद्यालय में आज भी देश-विदेश से विद्यार्थी विद्या रूपी धन अर्जित करने आते हैं।

गुरू जी ने यह भी समझाया कि सरबत का भला मांगने वाले को अपना भला मांगने की जरूरत नहीं होती। गुरू जी के भगतों ने उनके उपदेशों की तुलना जहाज से की है, गुरू जी के उपदेशों पर चलना उन के नाम रूपी जहाज पर चलने के बराबर है जो कि इस भौतिकवाद में भी संतोष प्रदान करता है। इस की सार्थकता और महत्व को स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि-

नानक नाम जहाज है, चढ़े सो उतरे पार।
जो श्रद्धा कर सेवदे, गुरू पार उतारनहार।।

- औंचलिक कार्यालय, अमृतसर

अवध शाहनामा

श्रीमती अर्चना शर्मा

> आधुनिकता कि चकाचौंध में देश के अन्य ऐतिहासिक शहरों की ऐतिहासिकता जहाँ कुछ फीकी पड़ गई है, लखनऊ को आज भी नवाबों का शहर कहा जाता है ।

देश के सभी छोटे-बड़े शहर प्रवासी रहन-सहन के अनुकरण की समस्या से जूझ रहे हैं। बढ़ते पाश्चात्य दबाव के कारण शहर अपनी वास्तविक पहचान को धीरे-धीरे खोने लगे हैं। लेकिन बढ़ते दबाव के बाद भी लखनऊ ने अपने लखनवी शान को काफी हद तक सहेज कर रखा हुआ है। देशवासियों के ज़ेहन में जब भी लखनऊ की बात आती है तो एक बेहद नज़ाकत एवं नफ़ासत से भरे शहर की छवि निश्चित रूप से बनती है। वहाँ जाने से पूर्व मेरे मन में भी लखनऊ की नज़ाकत एवं नफ़ासत को देखने एवं उसे अनुभव करने की तीव्र इच्छा थी। इस इच्छा की पूर्ति लखनऊ आकर हुई। पुराने लखनऊ की सड़कों पर घूमते हुए आप एक साथ न केवल विश्व प्रसिद्ध धरोहरों को देख सकते हैं अपितु यहाँ के स्थानीय निवासियों से मिलकर लखनऊ की नज़ाकत एवं नफ़ासत से परिचित हो सकते हैं।

आधुनिकता की चकाचौंध में देश के अन्य ऐतिहासिक शहरों की ऐतिहासिकता जहाँ कुछ फीकी पड़ गई है, लखनऊ को आज भी नवाबों का शहर कहा जाता है। इसकी स्थापना अवध के नवाब आसफ़उद्दौला ने 1775 ई. में की थी। इससे पूर्व अवध की राजधानी 'फैजाबाद' थी। राजधानी बनने के बाद अवध के शासकों ने लखनऊ को काफी समृद्ध किया। आज लखनऊ में हम जो भी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के भवन एवं स्मारक देखते है उसमें से अधिकांश की नींव उसके राजधानी बनने के बाद ही रखी गई है। जिसमें बड़ा इमामबाड़ा, छोटा इमामबाड़ा, रूमी दरवाज़ा, जामा मस्जिद, क्लॉक टावर, छतर मंज़िल, लखनऊ रेसिडेंसी आदि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के प्रमुख भवन एवं स्मारक हैं। इसके अलावा आधुनिक वास्तुशैली में निर्मित लखनऊ के विधानसभा (ब्रिटिश स्थापत्य शैली) एवं मुख्य रेलवे स्टेशन चारबाग़ (राजस्थानी भवन निर्माण शैली) भी लखनऊ की खूबसूरती को चार चाँद लगाते हैं।

यूं तो वर्तमान लखनऊ का इतिहास लगभग तीन सौ साल पुराना है। इतिहास की दृष्टि से देखें तो यह कालखंड कुछ

ज्यादा नहीं माना जाएगा। परंतु इतने कम समय में ही आधुनिक भारत के इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आज़ादी की पहली लड़ाई (1857 ई0) से लेकर आज़ाद भारत में भिन्न-भिन्न तरह के राजनीतिक -सामाजिक आंदोलनों के केंद्र में लखनऊ रहा है। यहां हम सिर्फ लखनऊ को खुबसुरत बनाने वाले ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के भवनों एवं स्मारकों की चर्चा करेंगे।

18वीं -19 वीं शताब्दी के मध्य भारतीय स्थापत्य कला खासकर मुगल शैली को समृद्ध एवं परिष्कृत करने का मुख्य केंद्र अवध बन गया। अंग्रेजों के आगमन के साथ ही देश में तत्कालीन केंद्रीय सत्ता (मुगल शासन) की शक्ति कमजोर पड़नी शुरू हो गई। उसके बाद मुगलकालीन स्थापत्य कला, साहित्य आदि का संरक्षण एवं पोषण करने का कार्य अवध ने किया। अवध के उन्हीं कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के भवन एवं स्मारकों का विवरण निम्नानुसार है :

1) बड़ा इमामबाड़ा

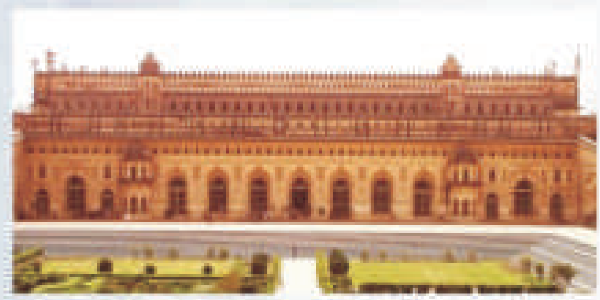

गोमती नदी के समीप स्थित इस इमामबाड़े को 1784 ई0 में अवध के तत्कालीन नवाब आसफउद्दौला ने बनवाया था। यहां आपको मुगल स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना देखने को मिलेगा। परिसर के बीचों बीच 163 फुट लंबा 53 फुट चौड़ा एवं 50 फुट ऊंचा एक बड़ा भवन है जो बिना किसी बीम एवं स्तंभ के सहारे बना है। बिना बीम एवं पिलर के सहारे बना यह विश्व का सबसे बड़ा भवन है।

2) छोटा इमामबाड़ा

बड़ा इमामबाड़ा के समीप स्थित इस इमामबाड़ा को हुसैनाबाद इमामबाड़ा भी कहते हैं। अवध के नवाब

मुहम्मद अली शाह ने इसे 1840 में बनवाया था। मुगल शैली में बने इस इमामबाड़े की खुबसूरती देखते ही बनती है। इसकी दीवारों पर हाथ से किए गए बारीक नक्काशी कुछ पलो के लिए आपको मंत्रमुग्ध कर देती है।

3) जामा मस्जिद

बड़े इमामबाड़ा के समीप स्थित यह मस्जिद मुसलमानों के सबसे पवित्र स्थानों में से एक है। मोहम्मद अली शाह ने 1839 ई0 में इसे दिल्ली के प्रसिद्ध जामा मस्जिद के तर्ज पर बनवाने का विचार लेकर शुरू किया था। लेकिन उनके आकस्मिक मृत्यु के होने कारण उनका सपना अधुरा ही रह गया। छोटा इमामबाड़ा की तरह मुगल शैली में इसकी दीवारों पर काफी सुंदर नक्काशी की गई है।

4) क्लॉक टावर

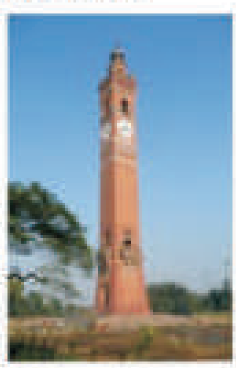

यह भारत का सबसे ऊंचा टावर है। 221 फुट ऊंचे इस टावर को अवध के प्रथम गवर्नर जनरल के सम्मान में 1887 ई0 में बनाया गया था। ब्रिटिश आर्किटेक्ट से प्रभावित इस टावर पर लगी घड़ी को ब्रिटेन से मंगवाकर इसमें लगवाया गया था। इस घड़ी का कुल व्यास 13 फुट है।

5) **रूमी दरवाजा**

बड़ा इमामबाड़ा के समीप ही स्थित यह दरवाज़ा अकाल के समय श्रमिकों को रोजगार देने के लिए नवाब आसफउद्दौला ने 1783 ई0 में बनवाया था। ऐसी मान्यता है कि प्रसिद्ध रोम और ओक्टोमान साम्राज्य से प्रभावित होकर इसका नाम रूमी रखा गया था। अवध शैली में बने इस गेट को पुराने लखनऊ का मुख्य द्वार भी कहा जाता है। 60 फुट ऊंचे इस दरवाजे के बीचों-बीच से एक सड़क निकलती है। जो पुराने लखनऊ को लखनऊ के अन्य भागों से जोड़ती है।

6) **लखनऊ रेसिडेंसी**

यह इमारत 18वीं, 19वीं शताब्दी के मध्य ब्रिटिश सत्ता का प्रमुख केंद्र थी जिसे आज म्यूजियम बना दिया गया है। ब्रिटिश स्थापत्य शैली से प्रभावित इस भवन की दीवारों पर काफी सुंदर पेंटिंग की गई है ।

7) **विधान सभा**

यहां आकर आपको ब्रिटिश स्थापत्य शैली के बेजोड़ नमूने देखने को मिलेंगे। अंग्रेजों द्वारा 1922 ई0 उत्तर प्रदेश की राजधानी इलाहाबाद से लखनऊ स्थानांतरित कर दी गई। इसके उपरांत 1922 ई0 में इसकी नींव रखी गई थी। ब्रिटिश स्थापत्य शैली में बने इस भवन की भव्यता देखते ही बनती है। आजादी से पूर्व एवं आज़ादी के बाद भी इस भवन को विधानसभा की बैठक के लिए प्रयोग किया जाता है।

8) **चारबाग रेलवे स्टेशन**

लखनऊ के अन्य ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के भवनों एवं स्मारकों के साथ ताल-मेल रखता यह रेलवे स्टेशन भी अपनी किस्म की भव्यता लिए हुए है। यह लखनऊ का सबसे बड़ा एवं प्रमुख रेलवे स्टेशन है। राजस्थानी भवन निर्माण शैली में बना इस भवन का निर्माण 1914 ई0 में किया गया था। इसकी भव्यता का दीदार करके आप निश्चित रूप से ही प्रफुल्लित होंगे।

लखनऊ वाकई ही भारत के कुछ उन चुनिंदा शहरों में से है जहां आपको आधुनिकता के साथ-साथ उसके प्राचीन ऐतिहासिकता के दर्शन एक साथ हो जाते है।

सहायक महाप्रबंधक
(प्र.का.अग्रिम विभाग, नई दिल्ली)

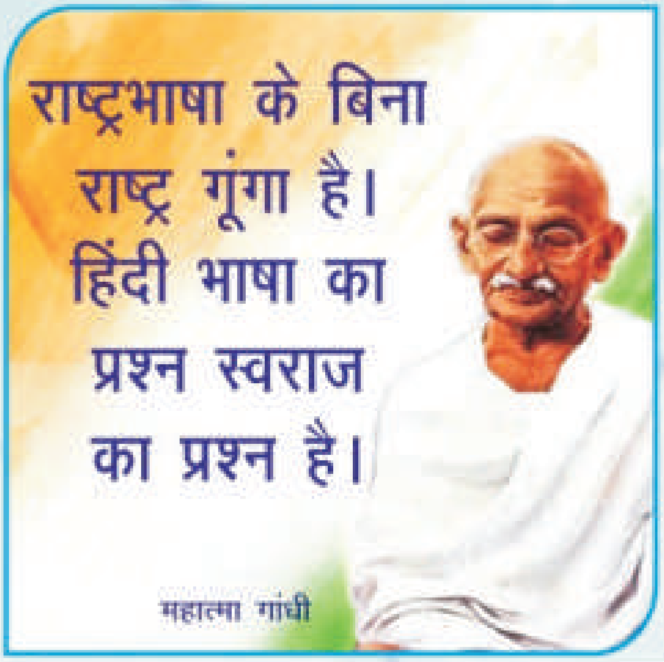

कार्टून कोना

प्रदीप कुमार रॉय, सतर्कता विभाग

ज़रा सोचिए......?

आनंद जोशी

मई-जून की चिलचिलाती धूप में, मैं और मेरा साथी अधिकारी रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे। गर्मी से सभी बेहाल थे। हवा में नमी का नाम-ओ-निशान नहीं था और ऐसी स्थिति में पानी का व्यर्थ बहना किसी को भी व्याकुल कर सकता था। जबलपुर काफी बड़ा रेलवे स्टेशन है, इसलिए रेलगाड़ियों में पानी भरने के लिए रेल-लाईन के किनारे ड्रेनेज पाईप की व्यवस्था यहाँ पर की गई है। उस समय एक ड्रेनेज पाइप से बहुत पानी बह रहा था। मैंने प्लेटफार्म पर बने एक छोटे से कार्यालय में संपर्क किया तो वहाँ सुपरवाइजर बैठा हुआ था। पानी बहने की जानकारी मैंने उन्हें दी। सुपरवाइजर ने कहीं से अपने अधीनस्थ कर्मचारी को बुलाकर ड्रेनेज पाइप बंद करने का निर्देश दिया। अधीनस्थ कर्मचारी ने सुपरवाइजर से कहा कि मेरी ड्यूटी अमुक खंभे तक ही है सो यह जिस खलासी के कार्यक्षेत्र में आता है आप उससे ही यह पाइप बंद कराएं। सुपरवाइजर ने कहा कि नहीं यह तुम्हारी ड्यूटी है जल्दी से जाकर पाइप बंद करो अन्यथा काफी पानी बह जाएगा। आप मुझे परेशान करने के उद्देश्य से ही इस तरह अनावश्यक कार्य करवाते हैं लेकिन मैं अब आपकी बात नहीं मानूंगा-अधीनस्थ ने उत्तर दिया।

दोनों तर्क-वितर्क में लगे हुए थे। एक-दूसरे को यह मनवाने में व्यस्त थे कि कार्य किसका है।बहते हुए पानी का मूल्य उनके तर्क-वितर्क के सामने कुछ न था। मैंने कहा कि कृपया पहले ड्रेनेज पाइप तो बंद कर दें फिर बाद में यह तय किया जा सकता है कि यह कार्य किसका है.... लेकिन... लेकिन वे कहाँ सुनने वाले थे। दोनों के अहम् टकरा चुके थे। इतने में मेरे साथी अधिकारी ने समझदारी दिखाई और रेल पटरियों पर उतरकर ड्रेनेज पाइप बंद कर आए। इसमें उसके कपड़े भी कुछ भीग गए।

हम भी कहीं अनजाने में या जानते-बूझते हुए अपने घरों या दफ्तरों में प्राकृतिक संसाधनों (पंखों, लाइटों, ए.सी. ब्लोयअर और जल संसाधनों) का नाजायज फायदा तो नहीं उठा रहे! ऐसा न हो कि हम सोचते.... विचार करते ही रह जाएं और प्रकृति की यह अमूल्य संपदा समाप्ति के कगार पर आ पहुँच जाए। क्या आप और हम भी इसी बहस में तो नहीं लगे हैं कि इनके संरक्षण की जवाबदारी किसकी है.....ज़रा सोचिए???

आँचलिक कार्यालय भोपाल

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

साकेत सहाय

भारत कृषि प्रधान देश है, परंतु यहाँ कृषि की दशा संतोषजनक नहीं है। निम्न स्तर पर सीमित विकास के बावजूद आज भी भारतीय कृषि परंपरावादी है। भारतीय किसान खेती, व्यसाय के रूप में नहीं करता है, बल्कि जीविकोपार्जन के लिए करता है। कृषि की पुरानी परंपरागत विधियों, पूंजी की कमी, भूमि सुधार की अपूर्णता, विपणन एवं वित्त संबंधी कठिनाइयों, आदि के कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता अत्यंत न्यून है। कृषि उत्पादन में वृद्धि पूर्व में जनवृद्धि दर से भी कम रही। इसी कारण 1975 तक देश की खाद्य समस्या जटिल बनी रही। कुल श्रम शक्ति के 51 प्रतिशत लोगों के जीवनयापन का साधन होते हुए भी कृषि आज बहुत पिछड़ी हुई है तथा किसान भाग्य भरोसे खेती करता है। देश का किसान शताब्दियों से भारतीय कृषि की कई समस्याओं से पीड़ित है यथा, खेती में परंपरागत तकनीक का उपयोग, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, धन की समस्या, अच्छे किस्म के बीजों का अभाव, प्राकृतिक आपदा(अतिवृष्टि, ओलावृष्टि आदि) तथा जरूरत से ज्यादा लोगों का कृषि पर आश्रित होना आदि। परंतु इन समस्याओं में सबसे विकट है- वित्त की समस्या। जिससे वह हर समय असुरक्षित महसूस करता है।

> प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के मूल तथ्यों को देखें तो यह योजना अपने उद्देश्यों में बहुत सफल है। क्योंकि इस बीमा योजना में पुरानी योजनाओं की गलतियों से सबक सीखते हुए कई सुधार किए गए हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अपने-आप में एक क्रांतिकारी योजना है। सही मायनों में यह योजना देश के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानने की पहल है।

वर्तमान दौर में देश में किसानों और कृषि क्षेत्र की हालत बहुत अच्छी नहीं है। ग्रामीण इलाकों में खपत में कमी और इससे संबंधित अन्य समस्याएं गंभीर चिंता का विषय बन चुकी हैं। इस चिंता में और इजाफा किया है, खराब मौसम की मार, जिससे कृषि क्षेत्र पर संकट दिन-प्रतिदिन गहराता जा रहा है। वैसे यह हाल पिछले दो साल से लगातार बना हुआ है। वर्तमान कृषि व्यवस्था परंपरागत दो फसली चक्र से दूर अपने संरचनात्मक बदलाव के कारण आज कहीं ज्यादा बाज़ार जोखिम की चपेट में है।

हम सभी 'अर्थ' की महत्ता से परिचित हैं और वही 'अर्थ' की शक्ति किसानों को सुरक्षा एवं सामर्थ्य प्रदान करेगी। हमारा संविधान भी देश के सभी नागरिकों को राजनैतिक और सामाजिक समानता के साथ-साथ आर्थिक अवसरों की समानता का अधिकार भी देता है परंतु उपर्युक्त समस्याओं के चलते समानता की ओर ले जाने वाली वित्तीय सुविधाओं यथा, बैंक, बीमा से किसान वंचित हैं। जिससे विकास का फायदा उस तक नहीं पहुंच पाता। निजी क्षेत्र की मौसम एजेंसी स्काईमेट और एसोचैम के एक अध्ययन के

अनुसार, भारत के करीब 14 करोड़ किसान परिवारों में से 20 प्रतिशत से भी कम फसल बीमा कराते हैं, जिससे वह हर समय भाग्य भरोसे रहता है। ऐसे में 01 अप्रैल, 2016 से घोषित प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना देश के किसानों के लिए क्रांतिकारी योजना साबित हो सकती है।

यूं तो भारत में बीमा व्यवसाय की जड़ें बहुत गहरी हैं। मनु (मनुस्मृति), याज्ञवलक्य (धर्म-शास्त्र) तथा कौटिल्य (अर्थशास्त्र) के लेखों में बीमा का उल्लेख है। यद्यपि बीमा शब्द का प्रयोग आदिकाल में नहीं किया गया है। तथापि, नीति के तौर पर संसाधनों को संग्रहित करने तथा अग्निकांड, बाढ़, महामारी तथा अकाल के दौरान ऐसे संग्रहित संसाधनों के पुनर्वितरण को राज्य के कर्तव्य के रूप में व्यक्त किया गया है। आजादी के बाद स्वतंत्र भारत की सरकारों द्वारा किसानों की दशा सुधारने के लिए उन्हें बीमा सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से कई योजनाएं लाई गईं। फिर भी किसानों की दशा सदैव दयनीय ही रही है।

फसल बीमा की सुरक्षा योजनाएं भी लगभग 40 वर्षों से हैं, पर अधिकांश का क्रियान्वयन लक्ष्यों को हासिल करने में असफल रहा है, जिसका नतीजा है अब तक मात्र 25 प्रतिशत किसान ही बीमे का फायदा उठा पा रहे हैं और वह भी आधा-अधूरा। छोटे और गरीब किसान तो अक्सर प्रीमियम देने की स्थिति में ही नहीं होते। ऐसे में वर्तमान योजना कितनी सफल होगी, इसका पता तो वक्त आने पर ही चलेगा।

वर्तमान सरकार द्वारा घोषित प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के मूल तथ्यों को देखें तो यह योजना अपने उद्देश्यों में सफल लगती है। क्योंकि इस बीमा योजना में पुरानी योजनाओं की गलतियों से सबक सीखते हुए कई सुधार किए गए हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अपने-आप में एक क्रांतिकारी योजना है। सही मायनों में यह योजना देश के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानने की पहल है। यह योजना सभी प्रकार की फसलों को बीमा क्षेत्र में शामिल करती है, जिससे सभी किसान किसी भी फसल के उत्पादन के समय अनिश्चितताओं से मुक्त होकर जोखिम वाली फसलों का भी उत्पादन कर सकेंगे। इससे पहले की योजनाओं में प्रीमियम के आधार पर दावे पेश करने का प्रावधान था, परिणामस्वरूप किसानों द्वारा भुगतान हेतु कम दावे पेश किए जाते थे। ये कैपिंग सरकारी सब्सिडी प्रीमियम के खर्च को सीमित करने के लिए थी, जिसे अब हटा दिया गया है और किसान को बिना किसी कमी के दावा की गयी राशि के अनुसार पूरा दावा मिल जाएगा। प्रीमियम की दरों में एकरूपता लाने के लिए, भारत के सभी ज़िलों को दीर्घकालीन आधार पर समूहों में बांटने की योजना है।

पहली नज़र में अगर देखें, तो इस योजना में जोखिम से निपटने के लिए उन तमाम सुरक्षा उपायों पर ही ध्यान दिया गया है, जो पहले से मौजूद हैं। मगर गहराई से जाकर देखें, तो यह उससे कहीं ज्यादा है। इस योजना की पहली बड़ी बात तो यह है कि इसमें कई बड़े कदम उठाए गए हैं। इस योजना के बहाने शायद पहली बार सार्वजनिक यानी सरकारी नीतियों में किसानों को उसका वास्तविक हक देने का प्रयास किया गया है। उन्हें वह मान्यता मिली है, जिसके वे हकदार हकीकत में हैं। जैसे कि हम बाकी लोगों की तरह ही उन्हें भी इस योजना में बुद्धिमान और तार्किक समझा गया है।

इस फसल बीमा योजना की विशेषताएं निम्न है :-

- इस योजना में कम प्रीमियम ज्यादा मुआवजा देने का प्रावधान है। किसानों को उपज नुकसान का 100 प्रतिशत भुगतान किया जाएगा।
- इस योजना से संरक्षित खेती और किसानों की सुरक्षित आय से उनकी क्रय शक्ति में इजाफा होगा।
- फसल नुकसान के आकलन के लिए स्मार्ट फोन और ड्रोन का इस्तेमाल किया जाएगा। जिससे 25 प्रतिशत राशि का तुरंत भुगतान होगा और 30-45 दिनों में शेष 75 प्रतिशत राशि जारी की जाएगी।
- खाद्यान, दलहन, तिलहन फसलों के लिए एक मौसम, एक दर होगी।
- पूरा संरक्षण मिलेगा-बीमा पर कोई कैपिंग नहीं होगी और इसके कारण दावा राशि में कमी या कटौती भी नहीं होगी।
- पहली बार जल भराव को स्थानीय जोखिम में शामिल किया गया है।

- देश में एक जैसी प्रीमियम दरें होंगी।
- बड़े राज्यों में दो बीमा कंपनियां व छोटे राज्यों में एक बीमा कंपनी योजना में शामिल की जाएगी।
- पहली बार देश भर में फसल कटाई के बाद चक्रवात एवं बेमौसम बारिश का जोखिम भी शामिल किया गया है।

पिछली तमाम सरकारी नीतियों को देखें, तो मानो यह समझने की परंपरा-सी चली आ रही थी कि किसान, जैसा कि आर्थिक इतिहास में भी बताया गया है कि एक मूक खेतिहर है। किसानों को ऐसा शख्स समझा गया है जिसके पास जुबान नहीं। इस सोच से भारतीय खेती को बड़ा नुकसान हुआ है। इसी अप्रासंगिक सोच की गिरफ्त में सरकारी नीतियों के रहने के कारण तमाम जोखिम भारतीय किसानों के कंधों पर ही रहे। क्योंकि नए अवसरों का प्रलोभन देकर उन्हें दो फसली व्यवस्था से दूर कर दिया गया। किसानों की बदहाली की सबसे बड़ी वजह उनका जोखिमों से निपटने में ज्यादा कुशल नहीं होना है तथा सरकारी नीतियों को समझने में भी वे नाकाम रहे। एक अर्थ में देखा जाए तो ग्रामीण भारत में किसानों की आत्महत्या बढ़ने की एक बड़ी वजह यह भी है।

> इस योजना में मोबाइल फोन, बैंक खाता और संभवतः आधार के इस्तेमाल की बात है, इसलिए मुआवजा सीधे लाभार्थी तक पहुंचना सुनिश्चित होगा। यानि यह योजना परोक्ष रूप से कैशलेस अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहित करेगी, यानि एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें समाज में सीमित या बहुत कम मात्र में नकदी का प्रवाह हो।

यहां पर एक उदाहरण के रूप में हम कपास की खेती की चर्चा कर सकते हैं। यह वह क्षेत्र है, जो किसानों की आत्महत्या से सबसे ज्यादा प्रभावित है। उन्नत बीजों की किस्में आने के साथ प्रति हेक्टेयर कपास की उपज अचानक ही काफी ज्यादा बढ़ गई। साल 2000-01 में प्रति हेक्टेयर कपास की उपज काफी ज्यादा बढ़ गई। साल 2000-01 में प्रति हेक्टेयर उपज जहां 190 किलोग्राम थी, वहीं 2011-12 तक आते-आते यह लगभग ढाई गुणा तक बढ़कर 491 किलोग्राम तक पहुंच गई। उपज बढ़ना एक ऐसा प्रलोभन है, जिससे कोई भी किसान इनकार नहीं कर सकता। इसका परिणाम यह निकला कि साल 2000-01 में कपास का जो रकबा 85.3 हेक्टेयर था, उसमें साल 2011-12 तक 40 फीसदी की वृद्धि हुई, और यह बढ़कर 1.21 करोड़ हेक्टेयर तक पहुंच गया। इसी तरह भारतीय किसान फल-फूल व सब्जियों की खेती की तरफ भी उन्मुख हुए। जिसका परिणाम यह रहा है कि लगातार तीसरे साल फल और सब्जियों का उत्पादन खाद्यान्न से भी करीब तीन करोड़ टन अधिक हुआ। चूंकि वैविध्यकरण आर्थिक दृष्टि से जरूरी है, इसलिए खेती की यह नई परंपरा अपने साथ नए जोखिम भी लेकर आई। जैसे कि कीटों का हमला और कीमतों की अस्थिरता, मौसम का पारंपरिक जोखिम तो पहले से था ही। इसके साथ ही, बड़े पैमाने पर पलायन और छोटे परिवार के कारण खेती से पारिवारिक श्रम व घरेलू मवेशी गायब हो गए। नतीजतन, इन सबके लिए किसानों की बाजार पर निर्भरता बढ़ गई। यानि तमाम निवेशों के लिए मुद्रा पर निर्भरता कृषि में उभरता ट्रेंड हो चला है। जिस वर्ष फसल खराब हो जाती है या जो वर्ष उत्पादन के लिहाज से बुरा माना जाता है, वह इन तमाम निवेशों के कारण किसानों के लिए विनाशकारी हो सकता है।

'इंडियाज फैक्चर्ड फार्म्स' नाम से पिछले साल इस बात पर काफी चर्चा की गई थी ग्रामीण संकटों से बहुत सारे संरचनात्मक कारक जुड़े हुए हैं। इसकी तमाह वजहों में से एक थी-बाजार आधारित उपायों, जैसे कि बीमा आदि का इस्तेमाल करते हुए नए जोखिमों से निपटने में खेती की अक्षमता। यही कारण है कि वर्तमान सरकार ने फसल बीमा योजना की कमियों को दूर करते हुए उसे दुरुस्त किया है। जिस वजह से यह किसानों के लिए अधिक आकर्षक बन गई है।

इस नई फसल बीमा योजना में किसानों द्वारा दी जाने वाली प्रीमियम राशि घटाई गई है। अब, रबी फसलों पर डेढ़ फीसदी, खरीफ पर दो फीसदी, और नकदी फसल अथवा फल-सब्जी की खेती पर पांच फीसदी की राशि देनी होगी। इसी तरह नकदी फसल और फल सब्जी की खेती में बीमांकन आधार पर (समय-समय पर भुगतान की गणना के लिए प्रयोग में लाने वाली विधि) जोखिम के मूल्यांकन का भी इसमें प्रावधान नहीं है। इसी गणना के कारण प्रीमियम राशि एक समय 25 फीसदी तक बढ़ जाती थी, जिसे चुकाना ज्यादातर किसानों के लिए मुश्किल हो रहा था। इतना ही नहीं, इस योजना में मोबाइल

फोन, बैंक खाता और संभवतः आधार के इस्तेमाल की बात है, इसलिए मुआवजा सीधे लाभार्थी तक पहुंचना सुनिश्चित होगा। यानि यह योजना परोक्ष रूप से कैशलेस अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहित करेगी, यानि एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें समाज में सीमित या बहुत कम मात्रा में नकदी का प्रवाह हो।

जाहिर है इस योजना के माध्यम से उभरते आर्थिक परिदृश्य में किसानों को शामिल करने की दिशा में सरकार ने पहला कदम उठाया है। इस योजना में भुगतान की जाने वाली प्रीमियम (किस्तों) की दरों को किसानों की सुविधा के लिए बहुत कम रखा गया है ताकि सभी स्तर के किसान आसानी से फसल बीमा का लाभ ले सकें। इस योजना में प्रीमियम को भी काफी कम कर दिया गया है। लेकिन हो सकता है कि गरीब या सीमांत किसानों को यह राशि भी भारी लगे। सरकार को इस श्रेणी के किसानों को बीमा के दायरे में लाने के लिए और कुछ तरीका ढूंढना चाहिए। दूसरी समस्या यह है कि जो किसान बैंक से लिया गया कर्ज नहीं लौटाते, उन्हें बीमा की राशि नहीं दी जाती। किसान अमूमन कभी कर्ज लौटाने की स्थिति में नहीं रहते। विशेष रूप से जब उनकी फसल खराब हो जाती है, क्योंकि तब उनकी आय नहीं होती। इसी वक्त उन्हें पैसे की जरूरत सबसे ज्यादा होती है और तभी उन्हें पैसा नहीं दिया जाता। इस वजह से भी किसान बीमा लेने से हिचकते हैं।

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद इस योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन सबसे बड़ी चुनौती है। क्योंकि अब तक यह देखा गया है कि योजना कितनी भी अच्छी क्यों न हो उसका जमीन पर कार्यान्वयन उतना प्रभावशाली नहीं हो पाता। उदाहरण के लिए, खेती के लिहाज से महत्वपूर्ण पंजाब या मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में फसल बीमा लेने वाले बहुत कम है लेकिन महाराष्ट्र, कर्नाटक या तमिलनाडु जैसे राज्यों में जहां फसल बीमा लेने वाले ज्यादा है वहां धोखाधड़ी या फर्जीवाड़ा बहुत ज्यादा है। किसान, बैंक अधिकारी और सरकारी कर्मचारी मिलकर फर्जी दावे बनाकर बीमा का पैसा लेते हैं। इस तरह दो क्षेत्र हैं एक तरह के क्षेत्र में बीमा लगभग नदारद है दूसरे क्षेत्र में बीमा का विस्तार बहुत है, लेकिन इसमें धोखाधड़ी भी बहुत हो रही है। जरूरत है इन दोनों ही क्षेत्रों में बीमा योजना के सफल कार्यान्वयन की।

इन सबके बावजूद बीमा की सुरक्षा सचमुच मिले, इसके लिए कृषि क्षेत्र में सुधारों की सबसे ज्यादा जरूरत है। सिंचाई की अच्छी सुविधाएं और वैज्ञानिक सलाह-सहायता से खेती की अनिश्चितता को काफी हद तक कम किया जा सकता है। मौसम पर इंसान का कोई नियंत्रण नहीं है, इसलिए मौसम की वजह से अनिश्चितता खत्म तो नहीं हो सकती और ऐसी स्थिति में बीमा की उपयोगिता बनी रहेगी। खेती में विकास हो और किसानों की आय बढ़े तो वे भी बीमा लेने के प्रति उत्साहित होंगे वरना वे प्रीमियम चुकाने के बोझ से बचने के लिए बीमा से ही कन्नी काटते रहेंगे। कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधारों के हिस्से के रूप में अगर बीमा को देखा जाएगा, तभी वह ज्यादा प्रभावशाली हो पाएगा।

यह योजना उस समय लागू हो रही है जब भारतीय कृषि जोखिम के दौर से गुजर रही है और सरकार ने इस क्षेत्र में चार प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करने का लक्ष्य रखा है। कृषि क्षेत्र में ऊंची वृद्धि हासिल करने के लिए सरकार को इसमें निवेश बढ़ाने की जरूरत है।

निष्कर्ष नयी फसल बीमा योजना 'एक राष्ट्र एक योजना' विषय पर आधारित है। ये पुरानी योजनाओं की सभी अच्छाइयों को धारण करते हुए उन योजनाओं की कमियों और बुराइयों को दूर करती है। यह योजना किसानों को मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ्य बनाएगी क्योंकि इस योजना से जुड़ना सरल है और इसमें सुरक्षा अधिकतम है। फिर भी इस योजना को सफल बनाने हेतु कृषि में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने, जमीन पट्टा नीति में सुधार करने, आसान बाजार पहुंच और किसानों में कुशलता विकास व प्रशिक्षण पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। इस योजना का मूल कथ्य है किसानों को जागरूक बनाना, क्योंकि इस योजना में स्मार्ट फोन व ड्रोन के इस्तेमाल के साथ-ही मोबाइल फोन, बैंक खाता और संभवतः आधार के माध्यम से मुआवजे को सीधे लाभार्थी तक पहुंचाने की बात कही गई है। अतः सबसे पहली जरूरत है, किसानों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त एवं समर्थ बनाने की। तभी यह योजना मूल उद्देश्यों को हासिल करने में सफल होगी।

प्रबंधक (राजभाषा) ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

काव्य मंजूषा

मेरे सपने मेरे अपने

डॉ. नीरू पाठक

सपनों में जीती हूँ मैं
तो क्या कुछ गलत करती हूँ मैं।

दिल करता है
चाँद की पतंग बनाऊँ
डोर बाँध फिर दूर तक
उसे उड़ाऊँ
क्यूँ न सूरज से फिर
पेंचे लड़ाऊँ
और अपनी जीत पर
कुछ गुनगुनाऊँ।
सपनों में जीती हूँ मैं
तो क्या कुछ गलत करती हूँ मैं।

दिल करता है
रात की ओढ़नी बनाऊँ
झिलमिलाते तारों को टाँक,
गोटा लगाऊँ
ओढ़ अपनी ओढ़नी
खिलते फूल की तरह
फिर मुस्कुराऊँ
सपनों में जीती हूँ मैं
तो क्या कुछ गलत करती हूँ मैं।

दिल करता है
हाथों में मेहंदी सजाऊँ
पैरों में पायल पहन
छमछम करूँ मैं
धरती नहीं
हवा में ही थिरक जाऊँ।

सपनों में जीती हूँ मैं
तो क्या कुछ गलत करती हूँ मैं।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

लम्हा

राजीव रंजन

एक पल, एक लम्हा,
वर्षों की यादों को ले,
पलभर में........
यूँ ही... बीत जाएगा।
इन यादों से जुड़कर भी।
अपना अलग अस्तित्व
रखना सिखला जाएगा।
न जाने किसकी तलाश में,
बस आगे बढ़ता जाएगा
ख्वाहिशें और मंजिलें
अभी और भी हैं
इन्हें पाना अभी शेष है
नियति है कि भवन
की नींव दिखती नहीं
पर भवन से अलग
होती भी नहीं

प्र.का. ऋण निगरानी विभाग

विरहणी नायिका - आधुनिक परिदृश्य

मयंक मोहन गोस्वामी

हे अट्टालिका पर तुम यह क्या कर रही,
क्यों व्यथित हो, मलिन मुख हो, क्या याद उनकी आ रही?
चाहे वे आएं न आएं, तुम व्यथा छोड़ो सखी,
देख चहुं ओर कितने ही चातक हैं सखी।।

तुम अगर यूं ही व्यथित हो अट्टालिका से गिर गई,
क्या होगा उन चातकों का जिनकी दृष्टि तुम पर रही।।
छोड़ अपनी इस व्यथा को तुम धरा पर आओ सखी,
वे हों या वे ना हों मैं तो तुम्हारा हूं सखी।।

तुम हो प्रखर तुम हो मुखर तुम यूं न अब उदास हो,
मैं भी हूं, तुम भी हो, हास हो परिहास हो।।
हास हो परिहास से वातावरण में उल्लास हो,
छोड़ परदुख एक हो जीवन बिताएं हम सखी।।

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग सुश्री नीलम साहनी, आई.ए.एस. के साथ श्री जतिंदरबीर सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एम. के. जैन, कार्यकारी निदेशक, श्री ए. के. जैन, कार्यकारी निदेशक एवं श्री एम. जी. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा सतर्कता न्यूज लैटर ''क्या करें और क्या ना करें'' का विमोचन करते हुए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने दिनांक 3.11.2016 को वाई.डब्ल्यू.सी.ए., अशोका रोड, नई दिल्ली में ईमानदारी को प्रोत्साहन देने तथा ''ईमानदारी को प्रोत्साहन देने तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन में जन-सहभागिता'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें दिल्ली से समाज के विभिन्न समुदायों के 200 से अधिक सहभागियों एवं बैंक के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया। श्री जतिंदरबीर सिंह, आई.ए.एस., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक के साथ सुश्री नीलम साहनी, आई.ए.एस, सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग (सम्माननीय अतिथि के रूप में) द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सतर्कता जागरूकता न्यूज लैटर, ''क्या करें और क्या ना करें'' के विमोचन के अवसर पर श्री एम. के. जैन, कार्यकारी निदेशक, श्री ए. के. जैन, कार्यकारी निदेशक एवं श्री एम.जी. श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री डी.डी. शर्मा, महाप्रबंधक, प्र.का. मानव संसाधन विकास विभाग व दिल्ली अंचल के दोनों आंचलिक प्रबंधक भी उपस्थित थे।

उपलब्धियाँ

वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा ''ग'' क्षेत्र की राजभाषा शील्ड आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी को प्रदान की गई। चित्र में आँचलिक प्रबंधक श्री नलिन हजारिका तथा राजभाषा प्रबंधक श्री अरुप सरकार राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण पत्र के साथ दृष्टव्य है।

आँचलिक कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा बैंक के विभिन्न कार्य-कलापों में ''प्रादेशिक भाषाओं का महत्त्व'' विषय पर कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान आँचलिक प्रबंधक श्री नलिन हजारिका स्टाफ-सदस्यों को संबोधित करते हुए।

विमोचन

'राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विमोचन करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) उनके साथ है कार्यकारी निदेशक श्री अरविंद कुमार जैन तथा अन्य उच्चाधिकारी गण।

मस्तिष्क मंथन

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा, प्रधान कार्यालय, लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में मस्तिष्क मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विभाग के सभी कार्मिकों ने भाग लिया। चित्र में दाएं से श्री राजिंदर सिंह बेवली, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री वी. के. मेहरोत्रा, उप महाप्रबंधक, श्री अजीत सिंह आहूजा, सहायक महाप्रबंधक बैठे है तथा डॉ. नीरू पाठक, प्रबंधक, राजभाषा विभाग कार्मिकों को संबोधित करते हुए।

राजभाषा गतिविधियाँ

आँचलिक कार्यालय, पटियाला द्वारा विभिन्न शाखाओं में भाषा के महत्व पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शाखा राजबाहा रोड़ पटियाला में "ग्राहक सेवा में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा का महत्त्व" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। चित्र में शाखा प्रमुख एवं अन्य कार्मिकों को राजभाषा अधिकारी श्री वैभव मिश्र संबोधित कर रहे हैं।

आँचलिक कार्यालय, बरेली में "ग्राहक सेवा में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा का महत्त्व" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। चित्र में आँचलिक प्रबंधक श्री संजीव श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी श्री महेन्द्र मीणा तथा आँचलिक कार्यालय में कार्यरत अन्य कार्मिक दृष्टव्य हैं।

अर्थव्यवस्था की अनिवार्यता : विमुद्रीकरण

तनोज कुमार दुन्ना

Demonetization का हिंदी शाब्दिक अर्थ "विमुद्रीकरण" है। सरल भाषा में इसे नोटबंदी भी कहा जाता है। कानूनी रूप से किसी मुद्रा इकाई की स्थिति/मूल्य को प्रचलन से हटा कर अमान्य कर देना ही विमुद्रीकरण कहलाता है। मोटे तौर पर यह राष्ट्रीय मुद्रा में एक प्रकार का परिवर्तन है। देश की अर्थव्यवस्था में जब भ्रष्टाचार काफी हद तक बढ़ जाता है और लोग नोटों को बैंकों एवं आर्थिक प्रचलन से दूर ले जाकर जमाखोरी करने लग जाते हैं तो Demonetization यानि विमुद्रीकरण आवश्यक हो जाता है। इसमें मुद्रा के पुराने इकाई को प्रचलन से बाहर कर एक नई मुद्रा इकाई के साथ प्रतिस्थापित कर दिया जाता है जो पुनः बैंकिंग प्रक्रिया में शामिल होकर सरकार को टैक्स (Tax) यानि कर के रूप में सहायक होती है और बैंकों के पास निवेश की क्षमता आ जाती है। इस तरह यह देश की अर्थव्यवस्था में प्राणवायु फूंकने का काम करती है। यूरोपियन संघीय राष्ट्रों द्वारा अर्थव्यवस्था में यूरो (Euro) को सन 2002 में अपनी मुद्रा के रूप में अपनाना विमुद्रीकरण का एक बहुत ही सरल उदाहरण है। इसके अलावा भी कई देशों ने इससे पहले भी विमुद्रीकरण पद्धति को अपना कर अपने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सफलता हासिल की है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए Demonetization यानि विमुद्रीकरण कोई नया नाम नहीं है। आजादी मिलने के ठीक एक साल पहले जनवरी 1946 में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा 1000 एवं 10000 मूल्यवर्ग के नोटों को सर्वप्रथम विमुद्रीकरण द्वारा परिचालन से हटाया गया था। वर्णनयोग्य है कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अब तक छापे गए अधिकतम मूल्यवर्ग के नोटों में 10000 मूल्यवर्ग के नोट सबसे पहले सन 1938 में प्रचलित (Introduced) किए गए थे। इसके बाद एक बार फिर सन 1954 में 1000, 5000 एवं 10000 मूल्यवर्ग के नोटों को पुनः प्रचलन में लाया गया था जिसे जनवरी 1978 में कालाधन और जमाखोरी के खिलाफ संघर्ष करते दूसरी बार विमुद्रीकृत (Demonetised) किया गया।

8 नवम्बर 2016 को देश के प्रधानमंत्री ने एक अभूतपूर्व एवं साहसिक कदम उठाते हुये 500 एवं 1000 मूल्यवर्ग के नोटों को विमुद्रीकरण सिद्धान्त द्वारा मध्यरात्रि 12 बजे से प्रचलन से हटा दिया और साथ ही 2000 मूल्यवर्ग के एक नए नोट को भी प्रचलन में लाते हुए अर्थव्यवस्था में शामिल कर दिया। यानि अगले दिन 9 नवम्बर से कुछ तय जगहों जैसे कि पेट्रोल पम्प, अस्पताल, रेलवे स्टेशन आदि को छोड़कर बाकी सभी जगहों पर 500 और 1000 मूल्यवर्ग के नोटों से लेनदेन पर रोक लग गई। इस एक कदम से देश के प्रधानमंत्री द्वारा एक साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के **तीन राक्षस रूपी शक्तियाँ यानि समानान्तर अर्थव्यवस्था, जाली नोट एवं आतंकी फंडिंग** पर प्रचंड वार माना जा रहा है।

विमुद्रीकरण के प्रभाव :

1 देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव : विमुद्रीकरण से देश की आर्थिक विकास की रफ्तार और तेजी से बढ़ने की उम्मीद है एवं साथ ही मुद्रा (Currency) अर्थव्यवस्था की कमियाँ यानि कालाधन, नकली नोट एवं छद्म बैंकिंग से उबरने में भी सहायक साबित होगा। पिछले साल यानि 2015 में विश्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक दक्षिण एशिया में भारत की विकास दर सबसे ज्यादा रही थी। 2015 में भारत की विकास दर 7.57 प्रतिशत रही जबकि बांग्लादेश की 6.55 प्रतिशत, पाकिस्तान की 5.54 प्रतिशत, श्रीलंका की 4.79

प्रतिशत, नेपाल की 3.36 प्रतिशत भूटान की 3.25 प्रतिशत, अफगानिस्तान की 1.52 प्रतिशत एवं मालदीव की 1.51प्रतिशत रही थी।

2 राजनीति एवं चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता : ये अघोषित सच्चाई है कि चुनाव में बड़े पैमाने पर काला धन खर्च किया जाता है। बात चाहे टिकट खरीदने की हो या मतदाताओं को लुभाने के लिए उनपर खर्च करने की या फिर प्रचार-प्रसार व अन्य लेनदेन की हो, विमुद्रीकरण होने से इन सभी गतिविधियों में फंडिंग नहीं हो पाएगी। ऐसे में चुनाव अपेक्षाकृत ज्यादा स्वच्छ एवं पारदर्शी होगा।

3 सस्ते होंगे रियल एस्टेट उद्योग : विमुद्रीकरण से रियल एस्टेट पर सबसे बुरा प्रभाव पड़ने की आशंका है। पिछले दो-ढाई साल में काला धन पर जो चोट हुई है उससे ये सैक्टर पहले से ही सदमें में है। रियल एस्टेट में पिछले दो-ढाई साल से रेट तकरीबन ज्यों के त्यों है। माना जाता है कि सबसे ज्यादा काला धन इसी सैक्टर में खपाया जाता रहा है। नोटबंदी के बाद माना जा रहा है कि बैंक की दरें घटेंगी जबकि घर-मकान आदि की कीमतें भी नीचे आएंगी यानि अपने घर का सपना देखने वालों के वाकई अच्छे दिन आ सकते हैं।

4 आम जनता की EMI होंगी कम : बैंकों के पास जिस तरह से पैसे जमा हो रहे हैं उससे बैंकिंग बाजार में लिक्विडिटी (Liquidity) यानि तरलता बढ़ने की काफी संभावना है जिससे बैंक जरूरतमंदों को आसानी से ऋण उपलब्ध करा सकेंगे एवं साथ ही बैंक के ब्याज दरें भी सस्ती हो सकती है। यानि सस्ते लोन (ऋण) से घर गाड़ी या अन्य चीजें खरीदना सस्ता पड़ेगा और EMI का बोझ कम होगा।

5 बैंक शक्तिशाली बनेंगे तो इनफ्रास्ट्रक्चर मजबूत होगा : भारतीय बैंकों के NPA यानि नॉन पर्फोर्मिंग एसेट्स (गैर निष्पादित अस्तियां) विश्व के अच्छे देशों की अपेक्षा बहुत उच्च स्तर पर हैं। इसका मतलब है कि जो पैसा बैंकों से जनता में जाता है उसका चक्रण होकर पुनः बैंकों तक नहीं पहुंचता है। नोटबंदी होने से छुपा कर रखे गए पुराने नोट

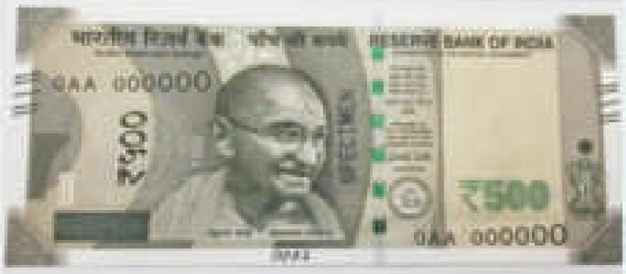

या तो पुनःचक्रण के रूप में बैंकों में वापस आएंगे या रद्दी हो जाएंगे और भारतीय रिजर्व बैंक उसी मूल्य के नए नोटों को छाप कर बैंकों के माध्यम से पुनः अर्थव्यवस्था में शामिल कर देंगे। इस तरह बैंकों के पास आधारभूत संरचना (Infrastructure) के विकास हेतु निवेश की अधिक क्षमता होगी और नागरिकों को कम ब्याज दरों पर ज्यादा पैसा मिलेगा एवं साथ ही लोगों को स्वरोजगार का अवसर भी मिलेगा।

6 काले धन पर हमला : वे व्यक्ति जो काले धन को नकदी के रूप में जमा रखे हुए थे वे विमुद्रीकरण की चपेट में पूरी तरह से आ जाएंगे। उनका काला धन अब कचरे के समान हो जाएगा। यदि वे इन नकदी को बैंक में जमा कराना चाहेंगे तो उस नकदी पर अतिरिक्त कर (Additional Tax) एवं जुर्माने (Penalty) के साथ-साथ उस नकदी के स्रोत का पूरा-पूरा हिसाब भी देना होगा।

7 आतंकी संगठन पर लगाम : यह सर्वविदित है कि आतंकी संगठन एवं उग्रवादी संगठन के साथ-साथ अराजकतत्वों को बड़े पैमाने पर असला बारूद आदि खरीदने के लिए नकदी के रूप में बड़े मूल्यवर्ग के नोटों की आपूर्ति होती रही है। विमुद्रीकरण से उन राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर काफी असर पड़ेगा। देश में आ रहे नकली नोटों का प्रयोग भी इन देश विरोधी गतिविधियों में किया जाता रहा है।

विमुद्रीकरण के रूप में नए नोट आने से आतंकवाद के साथ-साथ इन गतिविधियों पर भी लगाम लगेगी।

8 हवाला कारोबार : विमुद्रीकरण से हवाला कारोबार लगभग ठप्प पड़ गया है क्योंकि ये पूरा कारोबार नकदी में ही होता रहा है। देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में नकदी हवाला के जरिये ही पहुंचाई जाती है। इससे टैक्स (Tax) की भी चोरी होती है और पहले से ज्यादा काला धन उत्सर्जित (Re-generate) होता है। नोटबंदी से इन अवैध कारोबार पर भी लगाम लगेगी।

9 शैडो बैंकिंग : विमुद्रीकरण से शैडो बैंकिंग (Shadow Banking) एकदम से बंद हो जाएगी। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि अर्थव्यवस्था में वित्तीय स्थिरता का खतरा कम होगा। शैडो बैंकिंग का मतलब है बैंकों जैसी गतिविधियां करना। इन पर बैंकिंग जैसी कोई कानूनी बाध्यता नहीं होती और न ही कोई मजबूत कानून का शिकंजा होता है। बैंकिंग सिस्टम के बाहर जो लोग या संस्थान वित्तीय लेनदेन करते हैं उन्हें शैडो बैंकिंग कि श्रेणी में रखा जाता है।

10 नकली नोट होंगे बंद : नोटबंदी का सबसे बड़ा मकसद नकली नोटों के समस्या पर पूरी तरह से लगाम कसना माना जा रहा है क्योंकि नए नोटों कि सीरीज में सुरक्षा विशेषताएं ज्यादा है जिनकी नकल करना किसी के लिए भी बेहद मुश्किल होगा।

11 कृत्रिम अमीरी पर नकेल वर्ष 2014 में सरकार बनते ही प्रधानमंत्री ने संकेत दे दिया था कि काला धन रखने वालों के अच्छे दिन अब खत्म होने वाले है। काला धन पर लगाम लगाने के लिए सरकार द्वारा स्विट्जरलैंड और मॉरिशस जैसे देशों से अहम समझौते किए गए। 500-1000 मूल्यवर्ग के नोटों पर पाबंदी लगने से देश में नकदी के रूप में जमा काला धन कागज के टुकड़ों के समान रह जाएगा। यही वजह है कि देश में कहीं नदियों में नोट बहाए जा रहे हैं तो कहीं सड़क के किनारे जलाए जा रहे हैं।

अभी तक हमारी अर्थव्यवस्था काफी हद तक नकदी पर आश्रित है। देश की कुल आबादी की आधे से भी अधिक जनसंख्या अभी तक बैंकिंग प्रणाली के तहत वित्तीय लेनदेन से वंचित है। विमुद्रीकरण होने से संभवतया कुछ परेशानियां आम नागरिकों को झेलनी पड़ सकती हैं लेकिन इसके एवज में बहुत सारे फायदे और दूरगामी परिणाम मिलने की संभावनाएं हैं। यह सर्वविदित है कि समय समय पर कालाधन एवं जमाखोरी पर नियंत्रण पाने के लिए किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए विमुद्रीकरण एक प्रमाणित अभ्यास/प्रयोग (Established Practice) रहा है।

अतः यही कहा जा सकता है कि विमुद्रीकरण के रूप में प्रधानमंत्री द्वारा लिया गया फैसला एक ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय कदम साबित होगा जिसके दूरगामी परिणाम आने वाले समय में मिलते रहेंगे।

प्रधान कार्यालय, सरकारी व्यवसाय विभाग

धूल

पीयूष कुमार चतुर्वेदी

मैंने आज आँखों के सामने
देखी है धूल,
हवा में उछलकर
लौट मुझ पर जमती धूल,
टूटते रिश्तों के काफिलों से
उड़ती गिरती, पैरों को तस्कीन देती,
अनवरत धूल।

चाहता हूँ न कभी थमे बादल,
दुनिया ओझल किये,
स्वजनों का गोपन किये,
धूल में उमड़ता गुबार,
गिरती रहे मुझ पर धूल।

और जमते रहे,
टूटते रिश्तों के अन्तिम निशान,
आँखों में किरकिराते,
आँसू बहाते ये निशान।

हवा में उछलकर,
लौटकर जमती धूल,
अन्तरंग दर्पण में समाती धूल।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

एक भारतीय आत्मा

प्रियंका गुप्ता

अंग्रेजी सत्ता को सीधे चुनौती देने व परतंत्र भारत के युवाओं में राष्ट्रवाद का बीज बोने वाले कवियों में निःसंदेह पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी का नाम अग्रणी है। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अनेक महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्रीय परिदृश्य में अपने बहुआयामी और कालजयी कृतित्व की छाप छोड़ी है उनमें माखनलाल चतुर्वेदी का नाम उल्लेखनीय है। एक भारतीय आत्मा के नाम से सुप्रसिद्ध पंडित माखनलाल चतुर्वेदी हिंदी साहित्य जगत के सशक्त लेखक और पत्रकार होने के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रखर अभिव्यक्ति थे। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सियारामशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान व रामनरेश त्रिपाठी इत्यादि के साथ पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने भारतीय मानस में राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना प्रज्ज्वलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने जन्मप्रदेश के अनुरूप उनमें विविधिता कूट-कूट कर भरी हुई थी। काव्य लेखन के साथ-साथ उन्होंने कर्मवीर, प्रभा व प्रताप मासिक पत्रिकाओं का भी बड़ी कुशलता के साथ संपादन किया।

डॉ. नगेन्द्र द्वारा संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में डॉ. गोपाल राव जी ने श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी के विषय में लिखा है "चतुर्वेदी जी की रचनाओं में देश के प्रति गंभीर प्रेम और देश कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग की उत्कृष्ट भावना दिखाई देती है। इस मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को तभी सफलता मिल सकती है जब वह जीवन के सुख और वैभव को ठुकरा कर संघर्ष और साधना का मार्ग अपनाए। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा देशवासियों को इसी संघर्ष और साधना के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।"

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 04 अप्रैल 1883 को बावई, जिला होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में हुआ। चतुर्वेदी जी बचपन में अक्सर बीमार रहा करते थे। इनके पिताजी स्थानीय गाँव के एक हाईस्कूल में अध्यापक थे इसलिए इनकी आरंभिक शिक्षा वहीं पर हुई। प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति के पश्चात घर पर ही इन्होंनें संस्कृत का अध्ययन किया। सैयद अमीर अली मीर, स्वामी रामतीर्थ और माधवराव सप्रे का इनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। इनका परिवार राधावल्लभ संप्रदाय का अनुयायी था। अतः वैष्णव संस्कार इन्हें अपने परिवार से ही मिले थे। इनका विवाह पंद्रह वर्ष की अवस्था में हुआ उसके एक वर्ष बाद आठ रुपये मासिक वेतन पर इन्होंनें खण्डवा में अध्यापक की नौकरी कर ली। वर्तमान छत्तीसगढ़ और तत्कालीन मध्यप्रदेश के लेखक माधवराव सप्रे वर्ष 1907 से मासिक पत्रिका "हिंद केसरी" का संपादन किया करते थे जिसमें उन्होंनें सन् 1908 में "राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार" विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में खण्डवा के युवा अध्यापक माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम चुना गया। सप्रे जी को माखनलाल चतुर्वेदी जी की लेखनी में अपार संभावनाओं से युक्त साहित्यकार के दर्शन हुए और उन्होंनें चतुर्वेदी जी को इस ओर प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित किया।

अप्रैल, 1913 में खंडवा के हिंदी सेवी कालूराम गंगराड़े ने मासिक पत्रिका "प्रभा" का प्रकाशन किया जिसके संपादन की

जिम्मेदारी माखनलाल चतुर्वेदी जी को सौंपी गई। सितंबर 1913 में इन्होंने अध्यापक की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पूरी तरह से पत्रकारिता, साहित्य-सेवा व राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। इसी बीच सन् 1914 में इनकी पत्नी की असामयिक मृत्यु हो गई। जिस समय राष्ट्रीय परिदृश्य में माखनलाल चतुर्वेदी जी का आगमन हुआ उस समय स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय जनमानस में जोर पकड़ रहा था। अंग्रेजी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने की लालसा प्रत्येक भारतीय में गहराई से अपनी पैठ बनाई हुए थी। इस आलोक में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएं राष्ट्रीय-चेतना की संवाहक ही नहीं अपितु पोषक और प्रतीक भी थी। चतुर्वेदी जी ने भारतीय जनमानस में क्रांति की भावना का गंभीरता से अवलोकन तथा आत्मचिंतन किया। उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय समस्या के समाधान के लिए त्याग-समर्पण की आहुति दी जा रही है इसलिए पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रीय-भावनाओं से ओत-प्रोत कविताओं के माध्यम से अतीत का गुणगान किया तथा जनमानस में राष्ट्रीय-हित, उत्थान, चेतना, आत्मगौरव, स्वाभिमान, बलिदान की भावनाओं का संचार किया।

सन् 1913 में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने साप्ताहिक हिंदी पत्रिका "प्रताप" का संपादन व प्रकाशन प्रारंभ किया। पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण माखनलाल चतुर्वेदी जी का परिचय गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने विद्यार्थी जी के साथ सन् 1916 के लखनऊ अधिवेशन के दौरान राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के साथ मुलाकात की। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने यहीं अपने काव्यादर्श "एक भारतीय आत्मा" को पहचाना। महात्मा गाँधी द्वारा अंग्रेजी शासन् के विरुद्ध सन् 1920 में चलाए गए असहयोग आंदोलन में महाकौशल अंचल अर्थात वर्तमान छत्तीसगढ़ अंचल से प्रथम गिरफ्तारी देने वाले आंदोलनकारी माखनलाल चतुर्वेदी जी ही थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी के अध्यापक की नौकरी से त्याग-पत्र देने का एक कारण यह भी था कि वे प्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान देना चाहते थे। अपनी राजनीतिक अस्थिरता के कारण इन्हें अनेक बार बंदी बनाया गया। प्रभा और कर्मवीर जैसे पत्रिकाओं के माध्यम से ब्रिटिश शासन् के खिलाफ जोरदार प्रचार किया। इन्होंने 1921-22 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहभागिता की। प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन के दौरान वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के शनिचरी पड़ाव में 12 मार्च, 1921 को पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ओजस्वी भाषण दिया, जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने राजद्रोह समझकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दो माह के मुकदमें के पश्चात उनपर राजद्रोह का आरोप लगाकर आठ माह का अतिरिक्त कठोर कारावास का प्रावधान किया गया। बिलासपुर जेल में कारावास के दौरान उन्होंने 'पूरी नहीं सुनोगे तान', 'पुष्प की अभिलाषा' तथा 'पर्वत की अभिलाषा' आदि राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत कविताओं का सृजन किया। इनमें से कविता पुष्प की अभिलाषा से शायद ही कोई देश-प्रेमी अथवा साहित्य प्रेमी भारतीय परिचित न हो तथापि इसकी पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत किए बिना यह लेख शायद अधूरा रह जाए। इस कविता की पंक्तियाँ स्वतंत्रता के लिए बलिपथियों का स्पष्ट रूप से आह्वान करती है :

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,

चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि-डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।"

01 मार्च 1922 को उन्हें बिलासपुर से सेंट्रल जेल जबलपुर स्थानांतरित किया गया जहाँ से उन्हें 04 मार्च 1922 को रिहा कर दिया गया। इसके बाद सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी जी की काव्य-रचना का संसार वृहत है लेकिन कहीं भी इनकी कविता लोक-धरातल से परे अथवा कल्पनाशील प्रतीत नहीं होती है। अपनी ओज प्रधान कविता "जवानी" में भारतीयों को अपनी आंतरिक्त शक्ति जागृत करने की प्रेरणा देते हैं :

"द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दे
एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दे
मसल कर अपने इरादों सी उठाकर
दो हथेली है कि पृथ्वी गोल कर दे
रक्त है?या नसों में क्षुद्र पानी?
जांचकर, तू सीस दे-देकर, जवानी।"

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि हिंदू-मुस्लिम एकता के बिना असंभव था। ब्रिटिश सरकार यह जानती थी यदि हम हिंदुस्तान की जनता को धर्म विशेषकर हिंदू-मुस्लिम के आधार पर विभाजित कर दें तो हिंदुस्तान पर सहजता से शासन् करना कोई बड़ी बात नहीं होगी। चतुर्वेदी जी समाज की इस गंभीर तथा विकट समस्या के प्रति सजग थे तथा उन्होनें एकता के परस्पर अभाव को देखते हुए एकता के भावों को प्रदर्शित करने वाली काव्य रचनाएं भी की :

"मंदिर में था चाँद चमकता, मस्जिद में मुरली की तान।
मक्का हो चाहे वृन्दावन, होते आपस में कुर्बान।।

चतुर्वेदी जी ने काव्य के क्षेत्र में असाधारण प्रसिद्धि अर्जित की है। इनकी काव्य रचनाओं में हिम-किरीटिनी (1941), साहित्य-देवता (1942), हिम-तरंगिणी (1949), युग-चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता (1952), बीजुरी काजल आँज रही, वेणु लो गूंजे धरा (1960) इत्यादि प्रमुख है। इनकी कविताओं का संग्रह "एक भारतीय आत्मा" के नाम से संग्रहित है। इसके अतिरिक्त गद्यात्मक रचनाओं में कहानी संग्रह "वनवासी" तथा नाटक "श्री कृष्णार्जुन युद्ध" (1918) उल्लेखनीय है। "हिम-किरीटीनी" के लिए इन्हें वर्ष 1943 में उस समय हिंदी साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार "देव पुरस्कार" दिया गया तथा सन् 1954 में "हिम-तरंगिणी" के लिए इनको साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का स्थान अविस्मरणीय है। इन्होनें सन् 1913 में खण्डवा से मासिक पत्रिका "प्रभा" तथा वर्ष 1919 में जबलपुर से "कर्मवीर" पत्रिका का संपादन किया। साथ ही 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी जी के गिरफ्तारी के समय "प्रताप" का संपादकीय कार्य भी संभाला। माखनलाल चतुर्वेदी जी सन् 1943 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने ही मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित कराया कि "साहित्यकार स्वराज प्राप्ति के ध्येय से लिखें।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी इन्होनें राष्ट्रहित व सामाजिक-उत्थान में अपना दृष्टिकोण यथावत जारी रखा तथा आजाद भारत में उत्पन्न हुई स्वार्थपरता पर तीखा व्यंग-प्रहार करना अपना काव्य-धर्म समझा। इसके लिए उन्होनें अपनी काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार प्रस्तुत कीं :

"दस वर्षों से शिशु शासन् पर हम बूढ़े चढ़ बैठे ऐसे,
मीठी कुरसी, मीठे रुपये, मीठे सपने कैसे-कैसे?

क्रांतिवादिता और प्रगतिशीलता चतुर्वेदी जी के काव्य का प्रमुख स्वर है। इनकी रचनाओं में अनुभूति की प्रधानता विविध प्रकार की है जिनमें सशक्त भावाभिव्यक्ति की पूरी क्षमता दृष्टिगत होती है। भारत-चीन युद्ध के समय भी इन्होंने कविता के माध्यम से देशवासियों से देश की संप्रभुता के लिए आह्वाहन किया :

आओ आज हिमालय ने नित्त महामौन को तोड़ पुकारा,
रक्त चाहिए, रक्त चाहिए, बहने दो बलि-पथि धारा।"

स्वतंत्रता-भाव को अपनी लेखनी से पोषित करने वाले इस कवि को मध्य प्रदेश के "सागर विश्वविद्यालय" ने सन् 1959 में डी.

अच्छा व्यवहार वहां ले जा सकता है जहां अधिकार नहीं ले जा सकता।

लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसके पश्चात सन् 1963 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक व साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में इनके योगदान के लिए चतुर्वेदी जी को "पद्मभूषण" से अलंकृत किया लेकिन 10 सितंबर 1967 को राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलाल चतुर्वेदी जी ने यह अलंकरण लौटा दिया। जनवरी 1965 को मध्य प्रदेश के खण्डवा में "एक भारतीय आत्मा" के नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित द्वारका प्रसाद मिश्र के साथ राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर भी उपस्थित थे। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है।

डॉ. प्रभाकर माचवे जी ने टिप्पणी की थी कि "दादा का युग, वह युग था जब लोग प्रांत, भाषा और जाति भेद को भुलाकर बलि-पंथी होकर आते थे। गाँधी जी तब कहा करते थे कि बातचीत तो हम लोग करते हैं भाषण माखनलाल जी देते हैं।" डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन जी के शब्दों में "उनकी कविता प्रयत्न-साध्य कभी नहीं रही। उनके स्वरों में कविधर्म और जीवन-धर्म का समाहार हो रहा था। वेणु के गुंजन और शंख के उद्घोष की यह बानगी स्वयं में भी अनन्य थी।"

चतुर्वेदी जी की कविता युवकों को शौर्य, त्याग व आत्म-बलिदान की प्रेरणा देती है। सच्चे अर्थों में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जी राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि थे। भारत माँ के ये वीर सपूत 30 जनवरी सन् 1968 में हिंदी साहित्य जगत व भारतीय आवाम से रुखसत हो गए लेकिन तत्कालीन परिदृश्य के साथ-साथ आज भी इनकी कविताएं हमारे अंतर्मन में कर्तव्य परायणता का बोध जगाती है। देशवासियों को संघर्ष और कर्तव्य परायणता का पाठ पढ़ाने वाले चतुर्वेदी जी युग प्रवर्तक के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे। डॉ. विद्यानिवास मिश्र जी ने एक स्थान पर लिखा है "ध्यान से देखें तो समझ में आता है कि माखनलाल ने भारत को ही एक कविता की शक्ल में रचने की सफल कोशिश की है। उनकी वाणी में भारत की आत्मा बोलती थी।"

- आंचलिक कार्यालय भोपाल

उठ महान

माखनलाल चतुर्वेदी

उठ महान! तूने अपना स्वर
यों क्यों बेच दिया?
प्रज्ञा दिग्वसना, कि प्राण का
पट् क्यों खेंच दिया?

वे गाये, अनगाये स्वर सब
वे आये, बन आये वर सब
जीत-जीत कर, हार गये से
प्रलय बुद्धिबल के वे घर सब!

तुम बोले, युग बोला हर-हर
गंगा थकी नहीं प्रिय बह-बह
इस घुमाव पर, उस बनाव पर
कैसे क्षण थक गये, असह-सह!

पानी बरसा
बाग उग आये अनमोल
रंग-रंगी पंखुड़ियों ने
अंतर पर खोले,

पर बरसा पानी ही था
वह रक्त न निकला!
सिर दे पाता, क्या
कोई अनुरक्त न निकला?

प्रज्ञा दिग्वसना? कि प्राण पर पट क्यों खेंच दिया!
उठ महान तूने अपना स्वर यों क्यों बेच दिया।

कैशलेस क्रांति

रूप कुमार

आपने हरित क्रांति या फिर श्वेत क्रांति के बारे में सुना होगा, लेकिन क्या कभी कैशलेस क्रांति के बारे में सुना है?यह कैशलेस क्रांति ही तो है, जहाँ एक ओर नोटबंदी के समय कैश (नकदी) की समस्या है, वहीं दूसरी ओर ई-वॉलेट का उपयोग कर लोग इसका भरपूर फायदा उठा रहे हैं। भारत सरकार ने और स्वयं हमारे प्रधानमंत्री जी ने देश में सभी क्रिया-कलापों के लिए जहाँ सदैव हम प्रत्यक्ष नकदी के लेन-देन पर निर्भर थे, के स्थान पर कैशलेस लेन-देन की मुहीम चला रखी है। सरकार की इस मुहीम में ई-वॉलेट लोगों के लिए सबसे कारगर साबित हो रहा है। ई-वॉलेट कैशलेस भुगतान करने का सबसे तेज और सुविधाजनक तरीका है, जिसके द्वारा आप घर बैठे अपना मोबाइल रिचार्ज, बिजली का बिल, ऑनलाइन/ऑफलाइन खरीददारी, बस/रेलवे/हवाई जहाज टिकट, ऑटो टैक्सी आदि का भी भुगतान कर सकते हैं।

कैशलेस ट्रांजैक्शन

आज कैशलेस सिस्टम की चर्चा हर जगह हो रही है, क्योंकि देश के प्रधानमंत्री न केवल कैशलेस सिस्टम की वकालत कर रहे हैं बल्कि इसी को देश का भविष्य बता रहे हैं। बैंकों और एटीएम के बाहर लाइन में लगी जनता भी अब कैश की कमी के चलते कैशलेस सिस्टम की तरफ आकर्षित हो रही है। कैशलेस ट्रांजैक्शन के कई फायदे हैं-

1. कैशलेस ट्रांजैक्शन डिजिटिलाइजेशन के दौर में तेजी से लोकप्रिय होता माध्यम है। इस माध्यम से खरीदार और बेचने वाले को बैंक का सहारा लेने की जरूरत पड़ती है। इस माध्यम में आपके बैंक के साथ-साथ रिजर्व बैंक और सरकार के टैक्स विभाग की भी अहम भूमिका रहती है।
2. कैशलेस ट्रांजैक्शन के लिए प्लास्टिक मनी अथवा क्रेडिट और डेबिट का सहारा लिया जाता है। यह कार्ड किसी बैंक में अकाउंट खोलने पर दिया जाता है। इसके अलावा, बैंक का चेक और ड्राफ्ट कैशलेस ट्रांजैक्शन की श्रेणी में आता है। डिजिटल वॉलेट, मोबाइल बैंकिंग, एनईएफटी और आरटीजीएस भी कैशलेस ट्रांजैक्शन के तेजी से प्रसिद्ध होते तरीके हैं।
3. कैशलेस ट्रांजैक्शन में कैश जैसी आसानी नहीं देखने को मिलती है, लेकिन सुरक्षा के लिहाज से यह कैश लेने-देने से काफी बेहतर है। इस माध्यम में बैंक और सरकार के कर विभाग की नजर में प्रत्येक बड़े ट्रांजैक्शन रहते हैं। वहीं छोटे से छोटे ट्रांजैक्शन का भी पूरा ब्यौरा मौजूद रहता है।

आइए, अब हम आपको ई-वॉलेट (डिजिटल वॉलेट) के बारे में कुछ विशेष जानकारी देते हैं-

ई-वॉलेट या डिजिटल वॉलेट क्या है?

ई-वॉलेट या डिजिटल वॉलेट जिसे आप ई-बटुआ या डिजिटल बटुआ भी कह सकते हैं, एक इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस है जो एक व्यक्ति को इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन करने की अनुमति देता है। ई-वॉलेट वस्तुओं को खरीदने के लिए पैसे की जगह इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रीपेड खाता है।

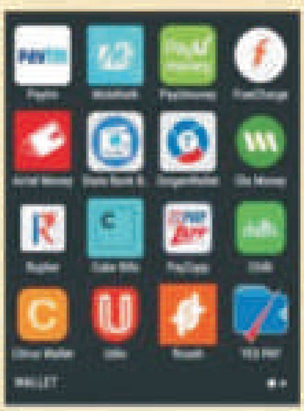

आपने MobikWik, Paytm, Freecharge आदि के विज्ञापन टी.वी. पर जरूर देखे

होंगे। ये सभी एक तरह के ई-वॉलेट हैं। ई-वॉलेट, स्मार्टफोन एवं कंप्यूटर का उपयोग कर भुगतान करने का एक नवोन्मेषी माध्यम है। आज देश के करोड़ों लोग स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं। इसलिए आजकल लोगों का रुख क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड से हटकर ई-वॉलेट की तरफ हो गया है।

ई-वॉलेट ने एक तरह से बटुए का स्थान ले लिया है। वे दिन गए जब आपको खरीदारी के लिए अपने बटुए को ले जाने की जरूरत होती थी। आज आप ई-वॉलेट का उपयोग कर कुछ भी खरीद सकते हैं। आज आपका स्मार्टफोन ही आपका बटुआ बन गया है।

ई-वॉलेट के प्रकार

क्लोज्ड वॉलेट : ये ऐसे वॉलेट है जो आपको एक विशिष्ट कंपनी या फुटकर बिक्री पर विशेष रूप से खरीद करने की अनुमति देते हैं। Jabong, Flipkart आदि इसी तरह के वॉलेट हैं।

सेमी-क्लोज्ड वॉलेट : इस प्रकार के वॉलेट आपको कई स्थानों पर खरीद और भुगतान करने की अनुमति देते हैं। पेटीएम, ऑक्सीजन, पेयूमनी, मोबिक्विक, फ्रीचार्ज, आदि इसी तरह के ही वॉलेट हैं। ये सभी वॉलेट भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित किए जाते हैं। इस प्रकार के वॉलेट में नकदी आहरण (Cash Withdrawal) या भुनाने (Redemption) की अनुमति नहीं होती है।

ऑपन वॉलेट : ये बैंक द्वारा प्रदान किए जाने वाले वॉलेट हैं। इस तरह के वॉलेट, सेमी-क्लोज्ड वॉलेट के सभी कार्यों की अनुमति देते हैं। इसके अलावा ये एटीएम से नकदी आहरण की भी अनुमति देते हैं। SBI Buddy और HDFC Chillar आदि ऑपन वॉलेट के उदाहरण हैं।

ई-वॉलेट के फायदे

यदि आपके पास स्मार्टफोन या कंप्यूटर है तो आप एक बार ई-वॉलेट का उपयोग अवश्य करके देखिए, आप खुद-बखुद समझ जाएंगे कि इसके क्या फायदे हैं। चाहे मोबाइल रीचार्ज हो या डाटा रीचार्ज, इलेक्ट्रिसिटी बिल हो या DTH रिचार्ज इनमें से किसी भी सर्विस का उपयोग करें, आपको एक अलग ही अनुभव प्राप्त होगा। आपको नए-नए रीचार्ज ऑफर, कैश-बैक ऑफर प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त ई-वॉलेट के अन्य कई फायदे हैं-

1. क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड Swipe करने की कोई जरूरत नहीं है।
2. 24x7 घंटे सर्विस की सुविधा उपलब्ध रहती है।
3. ई-पेमेंट करने के लिए आपको अपने बैंक खाते का उपयोग करने की कोई जरूरत नहीं है।
4. ई-वॉलेट एक प्रीपेड एकाउंट के रूप में होता है, अतः भुगतान के क्रमवसपदम होने की कोई संभावना नहीं है।
5. ई-वॉलेट का उपयोग कर हर राशि के व्यय पर आपको अतिरिक्त कैशबैक (Cash Back) मिलता है।
6. ई-वॉलेट का उपयोग कर हर खरीद पर आपको Reward और Discount मिलता है।
7. लेनदेन में विफलता (Transaction Failure) के मामले में पूरे पैसे वापस किए जाते हैं।
8. वॉलेट-टू-वॉलेट पैसे ट्रांसफर किए जा सकते हैं।
9. संबंधित ई-वॉलेट सेवा प्रदाता (Service Provider) द्वारा अधिकृत कई स्थानों पर ई-वॉलेट का उपयोग कर सकते हैं।
10. यूटिलिटी बिल पेमेंट, मोबाइल रीचार्ज, डीटीएच रीचार्ज, आदि घर बैठे कर सकते हैं।

ई-वॉलेट का उपयोग कैसे करें ?

ई-वॉलेट का उपयोग करने के लिए आप नीचे दिए गए चरणों का पालन करें-

1. स्मार्टफोन पर ई-वॉलेट का उपयोग करने के लिए पेटीएम,

रीचार्ज, मोबिकविक आदि के एप्प डाउनलोड कर सकते हैं। कोई भी एक एप्प डाउनलोड करने के बाद इसमें जानकारी उपलब्ध कर कर रजिस्टर करें और नया वॉलेट बनाएं ।

2. कंप्यूटर पर ई-वॉलेट का उपयोग करने के लिए संबंधित वॉलेट की अधिकारिक साइट (Official Site) पर जाएं और जानकारी उपलब्ध कर रजिस्टर करें एवं नया वॉलेट बनाएं अथवा लॉग-इन करें ।

3. अपने बैंक खाते से आईएमपीएस फंड ट्रांसफर, इंटरनेट बैंकिंग, क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड का उपयोग कर अपने वॉलेट में पैसा जमा करें ।

4. पैसा जमा करने के बाद आप अपने ई-वॉलेट का उपयोग कर सकते हैं ।

ई-वॉलेट का उपयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ

ई-वॉलेट का उपयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरती जानी आवश्यक होती हैं-

1. ई-वॉलेट में आवश्यकतानुसार ही पैसा डालें। जरूरत पड़ने पर इसमें पैसा जमा किया जा सकता है। आवश्यकता से अधिक पैसा जमा करने पर इसमें जोखिम का खतरा बना रह सकता है ।

2. किसी भी धोखाधड़ी से बचने के लिए आप अपना यूजर आईडी व पासवर्ड गोपनीय रखें ।

3. यदि आप मोबाइल पर ई-वॉलेट जैसे कि पेटीएम का उपयोग कर रहे हैं तो कार्य हो जाने के बाद उसे लॉग-आउट कर दें या फिर स्क्रिन पासवर्ड का उपयोग करें अन्यथा किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आपका पेटीएम वॉलेट उपयोग किया जा सकता है ।

4. कंप्यूटर में ई-वॉलेट को उपयोग करने के बाद लॉग-आउट अवश्य कर दें ।

- आइए अब आपको पेटीएम जो कि एक प्रकार का ई-वॉलेट है, की जानकारी देते हैं-

एक ऐसा नाम जो आजकल लगभग हर किसी की जुबान पर चढ़ा हुआ है और सबसे काम का साबित हो रहा है। यह एक प्रकार का ई-वॉलेट है। बाजार में नकदी की समस्या हो रही है और ऐसे में लंबी कतारों से बचने के लिए लोग पेटीएम वॉलेट का भरपूर फायदा ले रहे हैं।

पेटीएम एक डिजिटल वॉलेट सर्विस है जिसे मोबाइल एप्प एवं वेबसाइट दोनों माध्यमों से उपयोग किया जा सकता है। स्मार्ट फोन यूजर चाहे तो पेटीएम एप्प को अपने स्मार्ट फोन में डाउनलोड कर सकते हैं। यह ऑनलाइन शॉपिंग, मनी ट्रांसफर (मोबाइल से मोबाइल, मोबाइल से बैंक), मोबाइल रीचार्ज, डीटीएच रीचार्ज, मेट्रो सर्विस, टैक्सी सर्विस, बिजली बिल, गैस बिल, बीमा भुगतान जैसे कई भुगतान संबन्धित सर्विसेज प्रदान करता है।

क्या है पेटीएम वॉलेट ?

पेटीएम एक सेमी-क्लोज्ड वॉलेट है और इससे कैश नहीं निकाला जा सकता है। पेटीएम से कई अलग-अलग जगह (मर्चेंट लोकेशन) पर सामान और सर्विस के लिए पेमेंट का भुगतान किया जा सकता है। किसी भी सर्विस का तेजी से फायदा उठाने के लिए आप अपने डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड की डिटेल स्टोर कर सकते हैं। इसके अलावा नेट बैंकिंग का प्रयोग भी कर सकते हैं।

पेटीएम वॉलेट का इस्तेमाल कैसे करें ?

पेटीएम में एक वॉलेट भी है। इस वॉलेट को रिचार्ज कर बेहद कम समय में बिल भुगतान, किसी भी तरह के रीचार्ज को बिना देरी के किया जा सकता है। पेटीएम वॉलेट को डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग और आईएमपीएस मर्चेंट पेमेंट के जरिए रिचार्ज कर सकते हैं।

पेटीएम वॉलेट में आपको पासबुक का फीचर मिलेगा, जिसमें आपके सभी लेन-देन की जानकारी उपलब्ध रहती है। पेटीएम वॉलेट से आप किसी को भी मोबाइल नंबर या बैंक अकाउंट के जरिए पैसे भेज सकते हैं। इसके अलावा पेटीएम पर मिलने

वाले वाउचर भुना (रिडीम) भी कर सकते हैं।

अब तक आप कैशलेस क्रांति के बारे में बहुत कुछ जान ही गए होंगे। आप अपने पास पर्स (बटुआ) रखते हैं या फिर आपकी पॉकेट में पैसे हैं और आप भीड़ वाले स्थानों पर सफर करते हैं। ऐसे में आपको बार-बार यह डर होता है कि कहीं पर्स न खो जाए या फिर कोई जेब-कतरा आपके पैसे न चुरा ले। बिजली का बिल जमा करना हो या मेट्रो कार्ड रिचार्ज करवाना हो, आपको लाइन में खड़े होने की कोई जरूरत नहीं है। अब आप ई-वॉलेट का उपयोग कर अपना समय बचा सकते हैं। तो आइए हम सब मिलकर सरकार की इस मुहिम में साथ दें और इस क्रांति को सफल बनाएं।

- प्र.का.राजभाषा विभाग,

भीम ऐप्प

यह वित्तीय लेनदेन हेतु भारत सरकार द्वारा प्रक्षेपित एक मोबाइल ऐप्प है। डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए और इंडिया को कैश फ्री करने के लिए शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने मोबाइल ऐप्प 'भीम' लॉन्च किया है।

'भीम' ऐप्प का पूरा नाम 'भारत इंटर फेस फॉर मनी' है। यह यूआईपी पर आधारित पेमेंट सिस्टम पर काम करेगा और इसके जरिए ऑनलाइन पेमेंट आसानी से की जा सकेगी।

भीम ऐप्प को प्रयोग करने के लिए आपको एंड्रॉयड फोन या आईफोन चाहिए होगा। यह ऐप्प गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। फिलहाल यह ऐप्प हिंदी और अंग्रेजी भाषा को सपोर्ट करेगा। जल्दी ही क्षेत्रीय भाषाएं भी इसमें जुड़ेंगी ।

इस ऐप्प को यूज करने के लिए आपको बैंक अकाउंट और फोन में इंटरनेट कनेक्शन चाहिए होगा। आप अपने स्मार्टफोन में इसे इंस्टॉल करें, इंस्टॉल करने के बाद इसे खोलें। अपने बैंक के पंजीकृत मोबाइल नंबर से लॉग-इन करें एवं अपना कोड सेट करें। आपका अंगूठा भी कोड का काम कर सकता है।

इससे पैसे भेजने के लिए आपको सिर्फ एक बार अपना बैंक एकाउंट/खाता संख्या रजिस्टर करना होगा और एक यूपीआई पिनकोड जनरेट करना होगा। इसके बाद आपका मोबाइल नंबर ही पेमेंट एड्रेस होगा। हर बार एकाउंट नंबर डालने की जरूरत नहीं होगी। ऐप्प के होम स्क्रीन पर जाकर आपको पैसे भेजने के विधा को चुनना होगा। अब रिसीवर का मोबाइल नंबर या आधार नंबर या फिर पेमेंट एड्रेस डालें। इसमें आपको भेजे जाने वाली रकम डालनी होगी। अब आपका पहले से तय बैंक अकाउंट सामने आ जाएगा। अब आपको यूपीआई पिन डालना होगा। QR कोड स्कैन करके भी आप किसी को पेमेंट भेज सकते हैं। इसके लिए आपको सिर्फ QR कोड स्कैन करना होगा।

किसी अन्य व्यक्ति को पैसे भेजने के लिए उसका पंजीकृत मोबाइल नंबर वेरीफाई करें। फिर आप उसे अपना यूपीआई पिन डाल कर पैसे भेज सकते हैं।

भीम ऐप्प में आप लगभग सभी भारतीय बैंक खातों को इस्तेमाल कर सकते हैं।

किसी भी फोन से USSD कोड *99# डायल कर इस ऐप्प को ऑपरेट किया जा सकता है। ये बिना इंटरनेट के भी काम करेगा। 24 घंटे में कम से कम 10,000 रुपये और ज्यादा से ज्यादा 20,000 रुपये तक ट्रांसफर कर सकते हैं। आप भीम ऐप्प से अपना बैंक एकाउंट बैलेंस चेक कर सकते हैं। इस ऐप्प के साथ आप फोन नंबर के अलावा कस्टम पेमेंट एड्रेस को भी जोड़ सकते हैं।

भारतीय हॉकी टीम की शान है हमारे रमनदीप

अरिंदम नंदी

पंजाब एण्ड सिंध बैंक में कार्यरत हॉकी खिलाड़ी **श्री रमनदीप सिंह** ने स्वयं को हॉकी खेल जगत में एक उभरते सितारों के रूप में सिद्ध किया है। उनका जन्म एक छोटे से गाँव माइके में हुआ जो पंजाब के गुरदासपुर जिले में स्थित है। इनके पिता श्री रघुवीर सिंह पेशे से एक किसान है। पारिवारिक तौर पर श्री रमनदीप सिंह आर्थिक रूप से बहुत संपन्न परिवार से संबद्ध नहीं है किंतु अपने कठिन परिश्रमी स्वभाव और हॉकी के प्रति प्रेम ने उन्हें भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी में राष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में सफलता दिलाई।

रमनदीप सिंह हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) के उद्घोधन सत्र के हिस्सा थे किंतु दुर्भाग्यवश उन्हें किसी प्रायोजक द्वारा चुना नहीं गया, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और कठिन परिश्रम किया एवं सही समय आने का इंतजार किया और हॉकी इंडिया लीग के अगले ही सत्र में नीलामी में उत्तर प्रदेश विजार्डस द्वारा 81,000 डॉलर जो कि लगभग तब के रु. 50,00,000/-, में चुने गए और आश्चर्यजनक रूप से वे उस वर्ष के सबसे महंगे खिलाड़ी थे।

देश की ओर से खेलना सबसे अधिक गौरव की बात है और वे उस कार्य को बहुत अच्छे से कर रहे हैं। वर्ष 2013 में उनका सपना तब पूरा हुआ, जब उन्हें एशिया कप 2013 में राष्ट्रीय नीली जर्सी के साथ पहली बार खेलने का मौका मिला। अपने 86 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 27 गोल कर चुके हैं। टीम के हिस्से के रूप में उन्होंने कई उपलब्धियां हासिल की जो कि निम्न प्रकार है :

एशिया कप 2013, मलेशिया	: रजत पदक
कॉमन वेल्थ गेम्स 2014, ग्लासगो स्कॉटलैंड	: रजत पदक
एशियन गेम्स 2014, इंचेन, कोरिया	: स्वर्ण पदक
अजलान शाह कप 2015, मलेशिया	: कांस्य पदक
एचआईएल लीग फाइनल 2015, रायपुर, भारत	: कांस्य पदक
अजलान शाह कप 2015, मलेशिया	: रजत पदक

गौरवपूर्ण रियो ओलंपिक, 2016 में वे भी राष्ट्रीय दल का हिस्सा थे और इस बार भारतीय पुरुष हॉकी दल 36 वर्षों के अंतराल के बाद हॉकी खेल में नॉक आउट दौर में पहुंचा।

अंत में, उन्होंने अपने कैरियर में एक दूसरा आयाम हासिल किया। रमनदीप एवं उसके दल ने एशियन चैम्पियन ट्राफी 2016 में पाकिस्तान को 3-2 से हराकर देश को दीपावली का सर्वोत्तम उपहार दिया।

रमनदीप ने हमें दिखा दिया कि यदि आपके पास इच्छा शक्ति हो तो आप भाग्य के शिखर पर पहुंच सकते हैं।

हम कामना करते हैं कि वे अपने आने वाले मैचों एवं अपने कैरियर में सफलता के ऊंचाईयों को प्राप्त करें। रमन हमें आप पर गर्व है।

- प्रधान कार्यालय, अग्रिम विभाग

जो व्यक्ति दूसरों को खुशियां देता है, ईश्वर उसकी खुशी कम नहीं होने देता।

हिंदी/पंजाबी कार्यशाला

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

आँचलिक कार्यालय, लुधियाना

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय, जालंधर

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय, बरेली

कार्यशाला दौरान सत्र लेते हुए
मुख्य अतिथि नराकास, सचिव
श्री अमित चौधरी (प्रबंधक राजभाषा)

मेक इन इंडिया

प्रमोद कुमार

एक जमाना था, जब भारत के लोगों को उनके रोजमर्रा की चीजें उनके गांव में ही आसानी से मिल जाया करती थी। लोगों को बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। गांव का किसान खुशहाल था। लोगों के घर अन्न से भरे पड़े थे। छोटे मजदूर, कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार आदि सभी खुशहाल थे।

ब्रिटीश शासन से पूर्व भारत में अनेक देशी-विदेशी राजा, महाराजाओं ने शासन किया, परंतु वे सभी भारत भूमि के लिए ही जिए और यहीं के लिए मरे। उन्होंने भारत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भारत के लिए ही किया। इस प्रकार भारत में मेक फार इंडिया का सकारात्मक रूप देखने को मिला। वक्त बदला और इतिहास ने करवट लिया। भारत पर ब्रिटीश साम्राज्य स्थापित हो गया। अंग्रेजों ने भारत के उद्योग, व्यापार, कृषि आदि को नष्ट कर दिया। भारत के किसान, मजदूर, कारीगर आदि दुखी रहने लगे। अंग्रेजों ने भारत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अपने फायदे के लिए किया। वे भारत से कच्चा माल ले जाकर अपने यहां उत्पादन करने लगे और उन्हें भारतीय बाजारों में ऊंचे दामों पर बेचने लगे। इससे भारत के मजदूरों, कारीगरों, दस्तकारों का खूब शोषण हुआ।

इस प्रकार अपने सकारात्मक रूप में दिखने वाला मेक फॉर इंडिया अब नकारात्मक रूप में दिखने लगा। लगभग दो सौ वर्षों की गुलामी ने भारत को बरबाद कर दिया। तब आज तक भारत मेक इन इंडिया कम और मेक फॉर इंडिया अधिक बना हुआ है। आज हमारे लिए हथियार रूस, जर्मनी आदि देश बना रहे हैं। मोबाइल हमारे लिए चीन बना रहा है। भारत में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर बनाने वाले बहुत हैं, पर हार्डवेयर बनाने वालों की संख्या बहुत कम है। उन पर ही अमेरिका जैसे बड़े देशों का ही नियंत्रण है। कुल मिला कर हम ये कह सकते हैं कि हमारी आवश्यकता की अधिकांश वस्तुएं विदेशों में बन रही हैं और हम ज्यादातर उपभोक्ता बन कर रह गए हैं। इस लिए भारत अभी तक मेक फॉर इंडिया ही बना हुआ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात के सामाजिक एवं आर्थिक विकास भारत के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी इसी लिए भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया जो पूंजीवाद तथा साम्यवाद पर आधारित था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सारा विश्व पूंजीवाद और साम्यवाद के रूप में दो गुटों में बंट गया परंतु तीव्र आर्थिक विकास और सभी देशों से परस्पर सहयोग हेतु भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया यह उनकी कूटनीति एवं दूरदर्शिता का परिचायक बना। इस दौरान अनेक पंचवर्षीय योजनाएं लागू की गईं।

सन् 1990-91 में भारत में वैश्वीकरण व आर्थिक उदारीकरण को बढ़ावा मिला, जिसने प्रभुसत्ता की सीमाओं को तोड़ दिया। इसके फलस्वरूप भारत में मुक्त व्यापार का चलन बढ़ा। तब से लेकर आज तक भारत निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। परंतु आज भी हमारे समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। यही कारण है की आज भी हम विकसित नहीं विकासशील देश कहे जाते हैं

क्या है मेक इन इंडिया?

मेक इन इंडिया हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई एक महत्वाकांक्षी योजना है, जो उनके साहस, आत्मविश्वास, दृढ़संकल्प देश के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। मेक इन इंडिया का उद्देश्य राष्ट्र के निर्माण एवं प्रगति हेतु भारतीय एवं विदेशी निवेश को बढ़ावा देना है। प्रधान मंत्री बनने के बाद पहली बार देश के 69वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से उन्होंने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में मेक इन इंडिया की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था, कम मेक इन इंडिया। आप अपने उत्पाद को दुनिया के किसी भी देश में बेचें परंतु निर्माण हमारे यहां कीजिए।

मेक इन इंडिया से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य :

25 सितंबर 2014 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयन्ती पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में

मेक इन इंडिया का उद्‌घाटन किया गया। इसमें प्रधान मंत्री, अनेक केंद्रीय स्तर के कैबिनेट मंत्री व सरकारी अधिकारियों ने हिस्सा लिया। साथ ही रिलाइंस इंडस्ट्रीज के मुकेश अम्बानी, व अनिल अम्बानी, आदित्य बिड़ला समूह के कुमार मंगलम सहित अनेक देशी-विदेश उद्योग पति समारोह में उपस्थित थे।

अपने भाषण में प्रधान मंत्री ने मेक इन इंडिया को सफल बनाने हेतु प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ाने की बात कही। श्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में मेक इन इंडिया को सफल बनाने का एफ.डी.आइ. एक कारगर उपाय है। ये भारतीय एवं विदेशी सभी निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण है यह अनेक प्रकार के अवसरों और जिम्मेदारियों से भरा है। एक ओर जहाँ यह फॉरन डायरेक्टमेंट के माध्यम से विदेशी निवेशकों के लिए एक अवसर है, वहीं दूसरी ओर यह फास्ट डवलपमेंट इन इंडिया के जरिए भारतीय निवेशकों व युवाओं के लिए चुनौतीपूर्ण और जिम्मेदारियों से भरा हुआ है। अपने भाषण में उन्होंने स्वच्छता कार्यक्रम को भी मेक इन इंडिया से जोड़ने की बात की।

उद्‌घाटन के 4 दिन बाद 29 सितंबर 2015 को औद्योगिक नीति एवं विकास विभाग द्वारा सरकार के नेतृत्व में मेक इन इंडिया कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें विदेशी निवेश को बढ़ावा देने, देश के अंदर विदेशी व्यापार से संबंधित नीतियों को सरल बनाने के उपायों पर चर्चा की गई। साथ ही विदेशी व्यापारियों की समस्याओं के समाधान हेतु ऑनलाइन पोर्टल की शुरुआत की गई। मेक इन इंडिया को चीन और अमेरिका से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। इसकी सफलता के लिए भारतीय विदेशी निवेश को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश द्वारा 2015 तक 63 बिलियन डालर मिले। मेक इन इंडिया 20 हजार करोड़ की योजना है। शुरुआत में 930 करोड़ रुपए के निवेश की योजना है, जिसमें 580 करोड़ रुपए भारत सरकार दे रही है। दिसंबर 2015 को जापान सरकार द्वारा मेक इन इंडिया के लिए 12 लाख करोड़ का अनुदान दिया गया।

मेक इन इंडिया योजना में 25 क्षेत्रों जैसे कि आटो मोबाइल, बायो टेक्नोलॉजी, रसायन, इलेक्ट्रानिक्स, सूचना व प्रसारण, मनोरंजन, चमड़ा, फूड प्रोसेसिंग, सड़क, परिवहन, रेलवे, विमान आदि को शामिल किया गया है। 2015 में विश्व बैंक द्वारा व्यापार हेतु 189 देशों में शोध किया गया, जिसमें भारत 130वें स्थान पर है। साथ ही विश्व बैंक द्वारा भारत के 17 शहरों में व्यापार हेतु सर्वेक्षण किया गया। इसके लिए 5 चुनिंदा शहर लुधियाना, हैदराबाद, भुवनेश्वर, गुरुग्राम व अहमदाबाद लिए गए हैं।

मेक इन इंडिया को सफल बनाने के लिए रूस ने दिसंबर 2015 को भारत में बने मल्टी रोल हेलिकॉप्टर को खरीदा। औद्योगिक निर्माण के लिए सभी देशी-विदेशी कम्पनियों, उद्योगपतियों से अपील की। मेक इन इंडिया का प्रतीक भारत के राष्ट्रीय प्रतीक से लिया गया 4 पहियों वाला एक विशाल शेर है, जो भारत के चमकीले और सुनहरे भविष्य की ओर इंगित करता है।

मेक इन इंडिया के उद्देश्य

1 देश के अंदर उत्पादन की दर को बढ़ाना।

2 औद्योगिक एवं स्वदेशी निर्माण को बढ़ावा देना।

3 देश की राष्ट्रीय आय व सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि करना।

4 निर्यात को बढ़ावा देना व देश के अंदर विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि करना।

5 प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देना, जिससे विदेशी निवेशकों को अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों का ध्यान भारत की ओर केंद्रित हो सके।

6 देश के अंदर बुनियादी ढांचा गत सुविधाओं का निर्माण या उनका विकास करना।

मेक इन इंडिया के फायदे देश की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार होगा

इसका फायदा भारतीय युवाओं को ही होने वाला है। उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी उनकी क्रय शक्ति में वृद्धि होगी, रोजगार के नए अवसर मिलेंगे तथा भारतीय युवा अपने देश में रहकर ही अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकेंगे।

मेक इन इंडिया राष्ट्र निर्माण और युवा शक्ति का आईना है परंतु भारत को विश्व में अपनी पहचान बनानी है तो उसे मेक फॉर इंडिया की बजाय मेक फार वर्ल्ड बनना होगा, ताकि प्राचीनकाल में सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह राष्ट्र फिर से वही स्थान और विश्व में वही गौरव हासिल कर सके तथा राष्ट्र विकास की नई ऊंचाईयों को छूकर एक दिन विश्व का नेतृत्व कर सके।

आंचलिक कार्यालय,-1, नई दिल्ली

हमारी मातृभाषा हमारा परिचय

वैभव मिश्र

भाषा किसी भी देश की सांस्कृतिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक एवं मूल्योन्मुखी उपलब्धियों की अभिव्यक्तियों की सबल संवाहक होती है। हमारा देश भारतवर्ष विश्व भर में अपनी संस्कृति, भाषा व परंपराओं को लेकर परिचय की मोहताज नहीं है। विश्व भर के लोग हमारे देश के समृद्ध इतिहास से परिचित है और इसके लिए वह लगातार हमारे देश के इतिहास और भूगोल को जानने आते रहते हैं।

यह हमारे देश के लिए गौरव की बात है किंतु चिंतन का विषय यह है कि हम ही अपने देश की संस्कृति, इतिहास और अपनी भाषा को भूलते जा रहे हैं, चलो माना कि भूलना एक गलती है लेकिन चाहकर भी हम अपने को न जाने यह तो अच्छी बात नहीं।

हम देखते है कि सबको अभिमान होने पर अपना परिचय देने में बड़ा अच्छा लगता है जब हम आपस में बातें करते हैं तो एक दूसरे के बारे में बताते हैं - जैसे :

पहला व्यक्ति - (रसियन भाषा में) मैं रसियन हूँ..... और अपने देश की संस्कृति और भाषा से बहुत प्रेम करता हूँ... गर्व के साथ बताता है क्योंकि उसे अपने देश से प्यार है।

दूसरा व्यक्ति - (अंग्रेजी भाषा में) मैं भारतीय हूँ.... इतना बोलकर वह पहले व्यक्ति की तरह गर्व के साथ न बोल पाया क्योंकि वह ऐसा बोलने में हिचकिचा रहा था वो इसलिए कि वह अपने देश की भाषा और संस्कृति को भुला बैठा था।

पहला व्यक्ति - (हिंदी में बोलते हुए) श्रीमान जी आप अपना परिचय अपनी भाषा में देना क्यों नहीं पसंद करते क्या आपकी अपनी भाषा नहीं इतना सुनकर भारतीय व्यक्ति हतप्रभ रह गया कि वह रसियन होकर भी हमको हमारी भाषा में समझा रहा था।

वास्तव में जब हम दूसरे को अपना परिचय दें तो कुछ इस तरह से अपनी शैली में दें कि वह हमसे प्रभावित हो जाए (कहने का अर्थ यह है कि जब आपके पास अपने हथियार है तो आप दूसरों के सहारे क्यों?) जब-जब भारत की मातृभाषा पर मेरी लोगों से बात होती है तो वह इसके खिलाफ ही बोलने में लग जाते हैं और यह बात एक बहस का रूप ले लेती है।

मैंने अपने भारत से विदेश जाने वाले लोगों से कनाडा, अमेरिका व इटली जाने की प्रक्रिया के विषय में मालूम किया तो उन्होंने सारा कुछ बताकर आखिर में बताया कि अंग्रेजी जरूर सीख लेना नहीं तो बड़ी मुश्किल पड़ेगी क्योंकि वहाँ हिंदी नहीं चलती. ... इस पर मैं हँसा और बोला कि हिंदी क्यों नहीं चलती तो वे भड़क उठे और बोले तू जाने तेरी मर्जी.... मैंने उनको विनम्रता से जवाब दिया.... कि वहां के लोग अपनी भाषा से, बहुत प्रेम करते हैं इसलिए.... हिंदी नहीं चलती। जरा सोचो कि यह उनकी कितनी बड़ी उपलब्धि है कि वे अपनी भाषा हमारे देश में चलाए जा रहे हैं।

कई जगह मैंने भारत में देखा कि लोगों रोजगार हेतु विदेश जाने पर अंग्रेजी सीखने हेतु परिक्षाएं पास करना आवश्यक है जैसे - आइलेट, टॉफेल आदि जो कि अन्य देश विदेशी लोगों को अपने देश में बिना अंग्रेजी ज्ञान के रोजगार नहीं देते। जरा सोचो यह उन देशों का भाषा प्रेम नहीं तो और क्या है? ठीक इसी तरह से

अपने देश में भी विदेशी लोग हिंदी सीख कर आएं क्या ये नहीं हो सकता हो सकता है लेकिन क्या किया जाए हमारे तो अपने ही अपनों को भुलाने में लगे हुए हैं।

हम लोगों को हिंदी भाषा के महत्व को समझाने के लिए भारतीय रेल विभाग जिसका विश्व भर में महत्वपूर्ण स्थान है, का उदाहरण लेकर समझाते हैं।

वास्तव में रेलवे विभाग का हिंदी प्रयोग शत-प्रतिशत रहता है यदि ऐसा न हो तो बहुत से यात्री अपने गंतव्य स्थान पर न पहुंच पाएं क्योंकि हमारे देश में अधिकांश जनसंख्या हिंदी भाषी ही है।

आजकल मैं किसी भी विभाग में जाता हूं तो वहां के कर्मचारी अपने ग्राहकों से अगर ग्राहक शिक्षित है तब तो ठीक है लेकिन अगर ग्राहक अशिक्षित है तब भी वो कर्मचारी उस अशिक्षित ग्राहक से भी (साइन प्लीज) ही बोलते हैं ऐसे में ग्राहक असंतुष्ट होकर चला जाता है क्योंकि वो ऐसा समझते हैं कि वो बुद्धिमान हैं तो, तो सारी दुनिया ही बुद्धिमान है जबकि इस दुनिया में कई प्रकार के लोग बसते हैं।

वास्तव में मैं सोचता हूं जब हम गुलाम हुआ करते थे तो कई सेनानियों ने देश प्रेम और आज़ादी के लिए जान तक न्यौछावर कर दी और आज हम मात्र अपने हस्ताक्षर भी अपनी मातृभाषा में करने से कतराते हैं ऐसा लगता है कि किसी ने हमको भारत पाकिस्तान के बॉर्डर पर युद्ध करने के लिए कह दिया हो।

मेरे अनुसार यदि राजभाषा नीति में बदलाव किए जाएं तो वह ऐसे हो कि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज केवल हिंदी में ही जारी किए जाएं अगर ज्यादा आवश्यक हो तो उनको अंग्रेजी में जारी करें। यदि ऐसा हो जाए तो सभी लोग हिंदी भाषा को ही महत्व देने में लग जाएंगे और अन्य एक भाषी देशों की तरह वो अपनी भाषा को आवश्यक समझने लगेंगे क्योंकि जिस जगह पर केवल एक ही भाषा होगी वहां पर लोगों का ध्यान उसी भाषा के प्रति बढ़ता जाएगा।

खैर मैं तो अपने देश की भाषा व संस्कृति के विषय में गर्व के साथ जानने में लगा हुआ हूं और आप?.... यदि नहीं तो आप आज से ही गर्व के साथ अपने हस्ताक्षर हिंदी भाषा में करके इसकी शुरुआत करें।

जय हिंद....

आंचलिक कार्यालय, पटियाला

पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ-सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, स्कैच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहु-आयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य संपादक

पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग

21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

प्यारी बुआ

आरती सिंह

भोर हो रही थी, काली बदरी ने छँटना शुरू कर दिया था, पक्षी चहकने लगे थे, सूर्य की किरण ने पृथ्वी की गोद में दस्तक दे दी थी, तभी चारपाई पर लेटी बुआ (जिनका नाम जग्गो है) की आँख खुल जाती है। बुआ को लकवा मार गया है, दाहिने शरीर के हिस्से ने काम करना बंद कर दिया था। वह 92 साल की उम्र पार कर चुकी थीं, उनका रंग साँवला, शरीर हल्का और माथा चौड़ा उनके माथे पर एक तेज था जो सूर्य के समान प्रकाशमान होता था। बुआ का भरा-पूरा परिवार है उनके 7 बेटे हैं। उनके बेटे बड़े-बड़े शहरों में उच्च पदों पर आसीन हैं, पूरा गाँव उन्हें बुआ कहकर पुकारता है, उनके अच्छे कर्मों और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण लोग उन्हें देवी कहकर भी पुकारते। बुआ अपने पति दीनानाथ जी और छोटे बेटे-बहू अमन और रेखा जो गाँव के ही सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं, के साथ रहती थी। बुआ मन ही मन सूर्य को नमस्कार करती है थोड़ी देर मे बहू रेखा चाय लेकर आती है। दीनानाथजी बुआ को एक हाथ का सहारा देकर उठाते हैं, दूसरे हाथ से धीरे-धीरे बुआ को चाय पिलाते हैं। तभी गाड़ी की आवाज़ सुनाई देती है बुआ का मंझला बेटा सुरेन्द्र और बड़ी बेटी आशा जो बुआ की लाड़ली पोती है दौड़कर बुआ के पास पहुँच जाती है पर अपनी दादी की ऐसी हालत देखकर, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी देखकर रोने लगती है। बुआ की आँखे भी नम हो जाती है। आशा अपनी दादी का हाथ अपने हाथ में लेकर उनके माथे को प्यार से सहलाती है और कहती है "दादी आप चिन्ता मत करो, आप ठीक हो जाओगे", बुआ के होंठ भी हिलने लगते है। ऐसा लगता है कि मानो वह कह रही हो "मेरी लाडो कहाँ थी अब तक, दादी की याद नहीं आई तुझे, मेरी आँखे तरस गई, तुझे देखने के लिए।" देखते ही देखते बुआ के सभी बेटे-बहू, पोता-पोती, गली-मोहल्ले और दूसरे गाँव के लोग बुआ को देखने आए, सभी अपनी प्यारी बुआ से मिलना चाहते थे, आशा आँखो में आँसू लिए, छत पर जाकर रोने लगती है। आशा पुरानी स्मृतियों में खो जाती है उसे याद आता है कि जब छुट्टियों में गाँव आती थी, तो पूरा दिन दादी से बातें किया करती, उनके साथ खेतों में घूमने जाती थी। बुआ भी अपनी लाडली के लिए अच्छे-अच्छे पकवान बनाती, रात में बुआ के साथ सोती थी और उनसे बहुत सारी कहानियाँ सुनती, सोचते-सोचते आशा की आँख लग जाती है। बुआ जिनका नाम जग्गो है, अपने आप में त्याग प्रेम, मेहनत, दया की अद्भुत मिसाल है, बुआ अपने पिताजी जिन्हें वह काका कहकर पुकारती थी कि बहुत लाडली थी, काका बहुत ही ज्ञानी, विवेकशील, कर्मठ व्यक्ति थे, वह पैसे से भी काफी मजबूत थे, बुआ भी काका की तरह ही ज्ञानी और संस्कारी थी। आम लड़कियों की तरह उन्हें भी सजना-सँवरना, अच्छे-अच्छे पकवान खाना, घूमना-फिरना, बाते करना पसंद था। 14 साल की उम्र में बुआ का गौना हुआ (उनकी शादी 12 साल की उम्र में हुई थी) बुआ के पति दीनानाथ जी बहुत ही बुद्धिमान, ईमानदार और अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। काका ने दीनानाथ जी से विनम्र निवेदन किया कि वह हमारे यहाँ रहे, उनकी

देख-रेख और पढ़ाई-लिखाई का खर्चा वह स्वयं वहन करेंगे। दीनानाथ जी नहीं माने और उन्होंने मना कर दिया, पूरे परिवार द्वारा जब उनसे काफी अनुरोध किया गया तो आखिर में मान गए। बुआ अपने मायके में रहने के बावजूद अपना सर हमेशा ढक कर रखती थी। कुछ समय बाद दीनानाथ जी को एक सरकारी दफ्तर में अफसर की नौकरी मिल गई, उन्हें गाड़ी, नौकर-चाकर सभी सुविधाएं मिली, बुआ का जीवन संपन्नता पूर्वक और खुशहाली पूर्वक बीत रहा था।

देखते ही देखते 12 साल बीत गए, इसी दौरान बुआ ने पांच पुत्रों को भी जन्म दिया। अच्छा समय बीत रहा था लेकिन एक दिन ऐसी घटना घटी जिसने बुआ का पूरा जीवन ही बदल दिया, बुआ को पता चला कि उनके पति दीनानाथजी की नौकरी किसी आंतरिक विवाद के कारण छूट गई है, इस हताशा से अभी परिवार उभरा भी नहीं था, कि काका भी बुआ को छोड़कर स्वर्ग सिधार गए, काका की सारी जमीन उनके बेटे को मिल गई, बुआ के पास उनके पति द्वारा बनाया बड़ा घर और कुछ जमीन थी जो दीनानाथ ने अपनी नौकरी में रहते हुए खरीदी थी। दीनानाथ ने अपनी नौकरी के विवाद के विरुद्ध कोर्ट में केस डाल दिया, जिसमें बुआ का काफी जेवर बिक गया था, दीनानाथ जी और बुआ ने खेती करने का निर्णय लिया, बुआ जी-तोड़ मेहनत करती, बुआ पूरा दिन घर का काम करती, दोपहर में चिलचिलाती धूप में दीनानाथ जी के साथ खेतों में काम करती थी, शाम को घर आकर घर का काम, बच्चों की देख रेख करती थी, पालतू जानवरों को चारा-पानी करती, जब थककर चूर हो जाती तो आराम करने की जगह अपने सभी बेटों को साथ बिठाकर उन्हें रामायण, गीता और आदर्श पुरूषों की कहानियाँ सुनाती और उन्हें जीवन में पढ़ लिख कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती। समय कैसे बढ़ता चला जा रहा था, देखते ही देखते सालों बीत गए, बुआ ने इस दौरान दो और पुत्रों को जन्म दिया, बुआ ने बहुत मेहनत की, मेहनत के साथ ईश्वर की सच्ची भक्ति की अपने परिवार की खुशहाली के लिए व्रत रखें। समय ने फिर पलटी मारी, फसल में मुनाफा होने लगा था, दीनानाथजी ने मुनाफे से ही काफी जमीन खरीद ली, यह बुआ की कड़ी मेहनत और तपस्या का ही परिणाम था कि उनके तीन बेटो को बड़े-बड़े शहरों में उच्च पदों पर सरकारी नौकरी मिल गई, देखते ही देखते काफी साल बीत गए, बुआ के सभी बेटो को सरकारी नौकरी मिल गई सभी के विवाह सम्पन्न हुए, पोते-पोतियों की किलकारी से घर झूम उठा है। बुआ और दीनानाथजी के मन में संतोष था कि उनकी सभी संतानें कामयाब हो गई हैं, छोटे बेटे अमन को छोड़ कर सभी बेटे शहरों में बस गए। बुआ की उम्र ढल गई थी, वह बीमार रहने लगी थी, अपने बेटों को याद करके वह रोती रहती, जब छुट्टियों में उनके बेटे-बहू, पोता-पोती उनके पास आते तो खुशी से झूम उठती थी। गाँव के बच्चे बुआ से प्रेम करते थे, बुआ उनको कुछ न कुछ देती रहती थी, बुआ काफी दानी स्वभाव की थी। उनके पास पैसे या कोई सामान जो भी होता था वह गरीबों में बांट देती थी। बुआ अपने बहू को बेटी की तरह रखती थी। बहू को हमेशा बिटिया कहकर बुलाती थी। बुआ की कभी किसी से लड़ाई नहीं होती थी, वह सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करती थी। आशा की आँख खुल जाती, वह छत से नीचे उतर कर आती है डाक्टर साहब बुआ की जाँच कर रहे थे, डॉक्टर साहब आशा से कहते हैं ''परेशान न हो बिटिया, बुआ की हालत में काफी सुधार दिख रहा है, कुछ महीनों में बुआ अच्छी हो जाएगी।'' डॉक्टर साहब की बातें सुनकर आशा के मन में संतोष और खुशी जाग उठी। कुछ दिन बाद आशा मन में संतोष लिए वापिस मुम्बई लौट आई।

आशा ऑफिस के कार्य में व्यस्त हो गई, देखते ही देखते चार महीने बीत गए। आशा को विश्वास था, कि जब वह दिवाली पर दादी के पास जाएगी तो खूब बातें करेगी, नवरात्र शुरू हो गए, नवमी का पावन दिवस था, रात के बारह बजे थे। अचानक फोन की घंटी बजती है, आशा के पिताजी कमरे में आकर पूरे परिवार को बताते हैं कि ''अम्मा का स्वर्गवास हो गया'' अभी गाँव से फोन आया है। ऐसी खबर सुनकर परिवार में शोक का वातावरण पसर जाता है, आशा फूट-फूट कर रोने लगती है, वह सोचती है कि डॉक्टर साहब ने तो कहा था कि दादी ठीक हो जायेगी, तो फिर दादी हमें छोड़कर कैसे चली गई, आज पूरा गाँव शांत हो गया, सारी दिशाएं मौन हो गई, मानो पृथ्वी ने तो घूमना ही बंद कर दिया हो, क्योंकि सबकी प्यारी बुआ, सब को छोड़कर ईश्वर के पास चली गई है।

''बुआ का जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है, जिन्होंने जीवन में कभी हार नहीं मानी''

शाखा-राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली

विश्व शांति का सपना

शिवांगी सक्सेना

आज मानव प्रवृत्ति का खौफनाक रूप देखकर ऐसा प्रतीत होता है की शायद धरती पर विश्व शांति स्थापित करने का स्वप्न किसी आइने में दिख रही परछाई की भाँति प्रतीत होता है। जिसे हम देख तो सकते हैं परंतु वास्तविकता में परिवर्तित नहीं कर सकते हैं। परंतु विश्व शांति का अर्थ क्या है? देश में शांति सभी देश और लोगों के भीतर स्वतंत्रता और आनंद का आदर्श है। मनुष्य को संसार के सर्वश्रेष्ठ प्राणी के रूप में माना गया है। मनुष्य सदियों से ही अपने जीवन को बेहतर बनता देखने के लिए कई अविष्कारों को जन्म देता आ रहा है। परंतु उसी बीच उसके भीतर कई बदलाव भी आए हैं। शायद इस प्रतिस्पर्धा के बीच जहाँ मनुष्य दूसरों से बेहतर बनना चाहता है, वहीं उसने अहंकार को भी पाल लिया है। इंसान स्वयं को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने की होड़ में एक दूसरे की टांग खींचना और हिंसा करना भी सीख गया है। वर्तमान मानव अब वैसा नहीं रहा, जिसकी कल्पना ईश्वर ने वसुधा के निर्माण के समय की थी बल्कि इसके विपरीत मनुष्य हिंसक और विनाशकारी रूप में परिवर्तित हो चला है। धार्मिक ग्रंथों में यह लिखा है - "सिद्ध पुरुष तभी बना जा सकता है जब वह काम, क्रोध, मोह, लोभ और माया से दूर रहे।"

परंतु आज का आधुनिक मानव इन शब्दों का आदी हो चुका है। विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। लेकिन आज भी ऐसे कई देश हैं जो विश्व शांति का पर्दा ओढ़े आतंकवाद को सहारा देते आए हैं। कहा जाता है कि शिक्षा ही वो डोर है जिसके द्वारा हम एक दूसरे से जुड़े हैं। शिक्षा मनुष्य के भीतर धैर्य, क्षमा, सत्य जैसे भाव पल्लवित करती है। एक बीज अंकुर में पल्लवित होता है फिर धीरे-धीरे उसमें पत्ते आते हैं, कुसुम की महक पौधे को सजाती है, पौधा ऊँचा, और ऊँचा उठता है। उसी प्रकार राष्ट्र निर्माण व विश्व शांति की स्थापना हेतु सबसे पहले विद्यार्थी रूपी बीज बोना होगा। उर्दू शायर हाली ने सत्य ही सोचा है :

कब तक आखिर टल सकता है वह घर।
आ गया बुनियाद में जिसके खलल।।

एक विद्यार्थी मिट्टी के लौंदे के समान होता है जिसे जिस साँचे में उतार दिया जाए वह उस रूप में निखर जाता है। यह विद्यालयों और उनमें पढ़ाने वालों की परीक्षा ही होती है कि उनके विद्यार्थी नैतिकता की पटरी पर सपनों की रेल दौड़ा सकें। विद्यार्थियों को सर्वप्रथम अपनी श्वास, अपना व्यवहार व अपनी आत्मा को स्वच्छ एवं शांत रखने का गुण सिखाना महत्वपूर्ण है ताकि वे अपनी आत्मा को स्वच्छ एवं शांत रख पाए। जितना अंतर किसी को याद करने और याद रखने में होता है शायद उतना ही अंतर कानून को अपनाने और उसका पालन करने में होता है। चाहे सरकार कितने ही कानूनों को अपनी कोख से जन्म देती रहे परंतु अगर देशवासियों के बीच चैन, अमन और भाईचारे का वास नहीं होता तो देश तबाही की सीढ़ियों पर चढ़ता जाता है। इसलिए देश में अच्छी राजनैतिक व्यवस्था का होना भी आवश्यक है, ताकि कानून का पालन सही ढंग से हो सके परंतु इसलिए भी राष्ट्र में सुख, शांति, चैन व अमन अपना वास हमेशा बनाए रखें। कई बौद्ध धर्मावलंबी मानते हैं कि विश्व शांति कि स्थापना संपूर्ण तभी हो सकती है, जब हम अपने भीतर शांति स्थापित करें। बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम के अनुसार शांति हृदय के भीतर से आती है। इसे इसके बिना न तलाशें। विचार यह है कि दूसरों को उपदेश देने से पूर्व अपने अंदर के प्राणी को झाँकें। शांति को शांत मन से तलाशें। स्थापित करने के पूर्व हमें अपने अंदर पल रहे नकारात्मक विचारों जैसे क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, जलन आदि निकालकर सकारात्मक विचारों का अंश अपने हृदय के भीतर सींचना होगा ताकि उसके हरे-भरे होते ही मनुष्य देश के विकास व प्रगति के कार्यों में खुद को जल की तरह ढाल पाए। विश्व शांति और वसुधैव कुटुम्बकम का मिलन होते ही धरती पर विश्व शांति स्थापित हो जाएगी और संसार का भविष्य भी सफलतापूर्वक संवर जाएगा। विश्व युद्ध रोकने के लिए व विश्व शांति को पूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु हम सभी को उन दायरों, सीमाओं व बंधनों के बीच उलझी उस गाँठ को सुलझाना होगा जो हमें एक दूसरे से अलग करती है।

- सुपुत्र प्रमोद सक्सेना,
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, प्रधान कार्यालय

ज़िंदगी यह नहीं कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि यह है कि आप कैसे रहते हैं।

वर्ष 2017 के कैलेंडर का विमोचन

वर्ष 2017 के कैलेंडर का विमोचन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) द्वारा किया गया, चित्र में कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश जैन, श्री अरविंद जैन तथा अन्य उच्चाधिकारीगण दृष्टिगोचर है।

नववर्ष की हार्दिक
शुभकामनाएँ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
Where service is a way of life

द्वारा आयोजित

सरकारी कर्मचारियों के लिए विशेष स्कीम
आवास एवं ऑटो ऋण

केवल 7वें पे कमीशन के लाभार्थियों-केंद्रीय एवं राजकीय सरकारी कर्मचारियों पैंशन धारकों, रक्षा कर्मियों एवं पूर्व सैनिकों के लिए

स्कीम 31.03.2017 तक वैध

आवास ऋण

* न्यूनतम मासिक किश्त
* शून्य प्रोसेसिंग फीस
* आकर्षक ब्याज दर*
* अधिकतम भुगतान 75 वर्ष की आयु तक

वाहन ऋण

* न्यूनतम मासिक किश्त
* शून्य प्रोसेसिंग फीस एवं शून्य मार्जिन (इंश्योरेन्स आदि छोड़ कर)
* आकर्षक ब्याज दर*
* अधिकतम ऋण आयु 70 वर्ष अधिकतम भुगतान 75 वर्ष की आयु तक

अधिक जानकारी के लिए हमारी नजदीकी शाखा से सम्पर्क करें
डायल करें : 1800 419 8300 (टोल फ्री नं.) अथवा
हमारी वेबसाईट www.psbindia.com पर जाएं

FOR FURTHER DETAILS, PLEASE CONTACT NEAREST BRANCH
Dial 1800 419 8300(All India Toll Free) or
Visit us at: www.psbindia.com

*शर्तें लागू